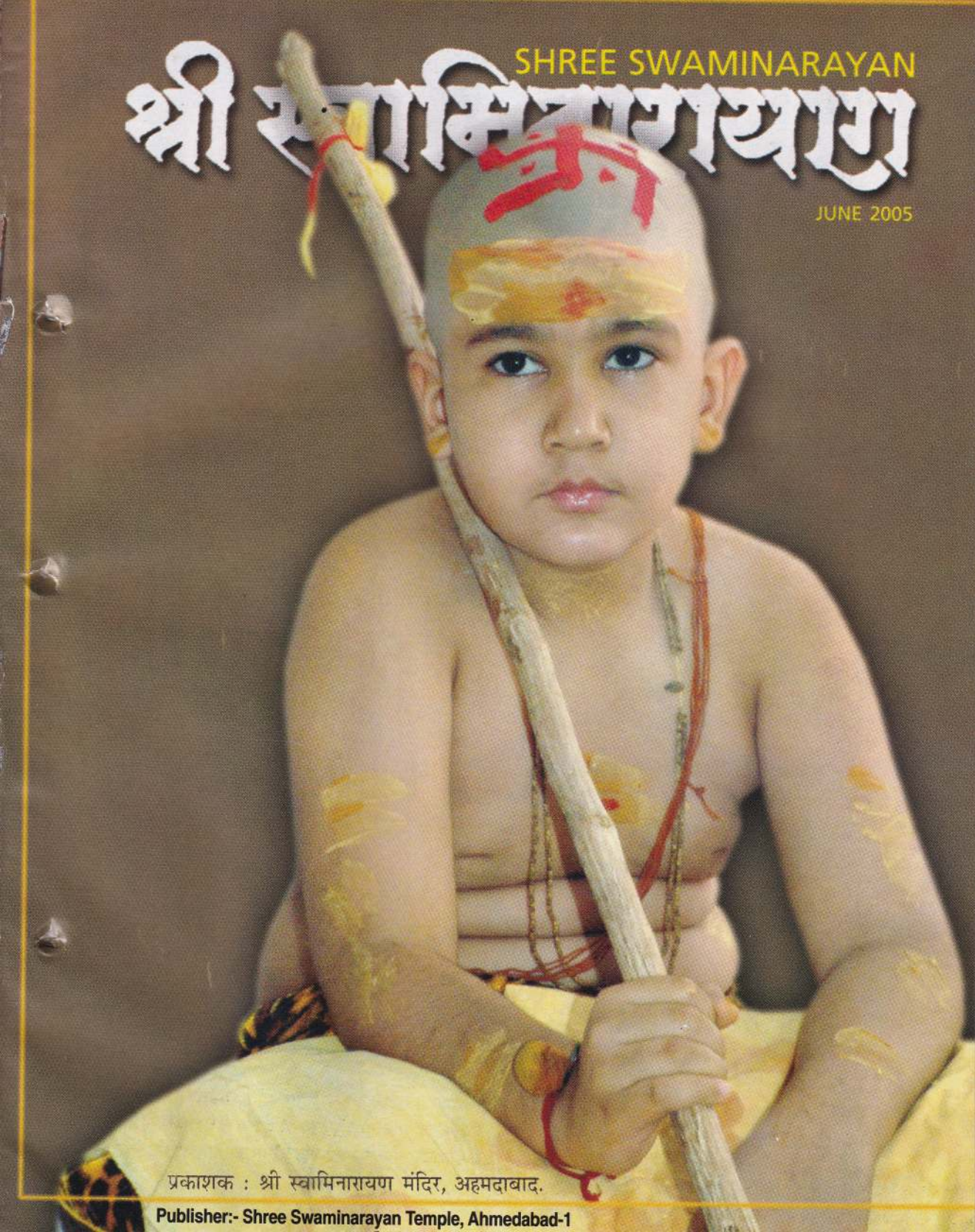
SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

JUNE 2005

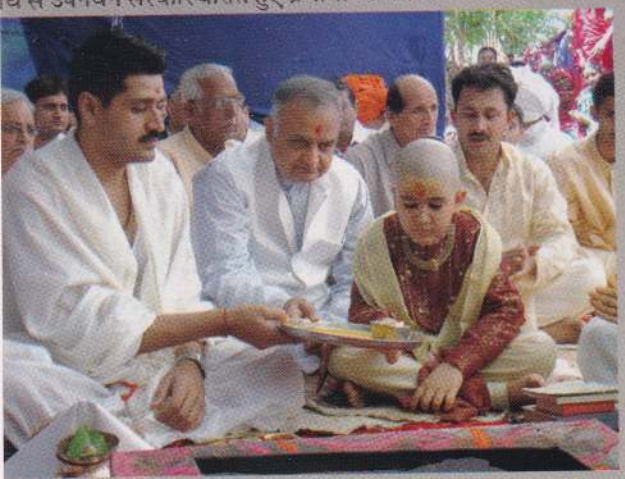


प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद.

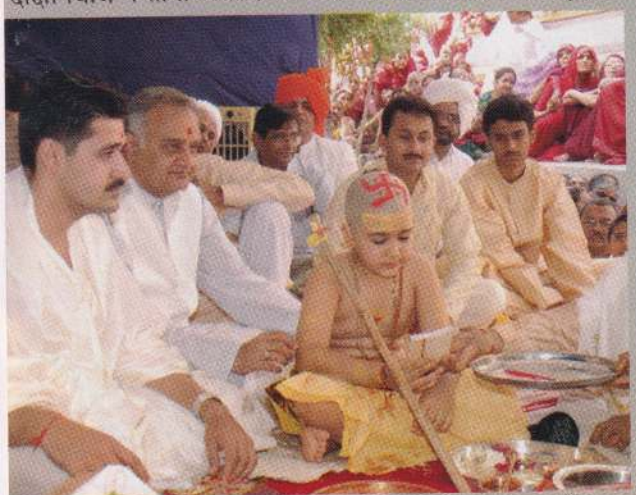
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



दादाजी तथा पू. पिताजी के साथ में प.पू. लालजी महाराज का वेदोक्त धि से उपनयन संस्कार कराते हुए प्रधानाध्यापक डॉ. वाचस्पति मिश्राजी।



दीक्षा विधि में तीनों अपर स्वरूपों का अलौकिक दर्शन होते हुए।



नयन संस्कार के बाद प.पू. अ.सौ. गादीवाला जी के पास से अलौकिक मूल्य तथा करोडो के जीवन की संजीवनी शिक्षापत्री को सहर्ष स्वीकार



प.पू.अ.सौ. बिंदूराजा यज्ञोपवीत संस्कार विधिमें काजल लगाकर संस्कार से संस्कृत करते हुए।



सर्वोपरि श्रीहरिने हम सभी पर अतिदया करके श्री नरनारायण देव पीठस्थान पर तीनो अपर स्वरूप के रूप में दर्शन दे रहे हैं। पू. दादाजी अपने प्रिय पौत्र रत्न को चंदन लगाकर आशीर्वाद दे रहे हैं।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ जून -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
टीले फेक्स : २७४९९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	स्वामिनारायण संप्रदाय की गुरु परंपरा	५
४.	अति भव्यता एवं दिव्यता के साथ प.पू. लालजी महाराजका उपनयन संस्कार संपन्न	८
५.	श्री नरनारायण देव में अप्रतिम स्नेह एवं श्रद्धा रखनेवाले अपने पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी	९
६.	सत्संग सुरभि - प्रभाव पहचान कर बने प्रभवानंद	११
७.	भावि आचार्य का उपनयन संस्कार	१२
८.	संस्कृतभाषा	१३
९.	जीभ किसकी उत्तम	१४
१०.	भगवान श्री स्वामिनारायण एवं जेतलपुर धाम	१५
११.	सत्संग बालवाटिका (१) स्नेह बिना का संगीत (२) गांठ का गोपीचंदन	१७
१२.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

मानवमात्र की इच्छा होती है - सांसारिक दु:खों से मुक्ति के लिए जिस हेतु वह सतत आदि काल से प्रयास करता आरहा है । दुनियां में कहीं भी जन्म लिया जीव हों वह देश काल के आधीन होकर मत - पंथ या धर्म संम्प्रदाय में जन्म लिया हो लेकिन मुक्ति के लिये नाना प्रकार के उपाय का अन्वेषण करता रहता है । किसी को यदि आंशिक उपाय मिली है तो किसी को सच्चे मार्ग का दर्शक ही नहीं मिला है । परिणाम स्वस्म वह सांसारिक प्रपंचो में और ही फंसता जाता है । ऐसे अपार दु:ख दर्द तथा वेदना के महासागर में डूबते जीवों पर अत्यन्त करुणामयी मूर्ति अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी भगवान श्री पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण की करुणा द्रवित हो उठी और अनंत जीवों को अपने दिव्य अक्षरधाम में आत्यंतिक मोक्ष देने हेतु स्वयं भगवान पुरुषोत्तम नारायण ही इस पृथ्वी पर मनुष्य शरीर धारणकरके प्रगट हुए तथा दिव्य उद्धव सम्प्रदाय की स्थापना की । जिसमें शास्त्र मर्यादा तथा लोक मर्यादा की स्थापना करके शीलवान तथा चरित्रवान भक्त समाज की स्थापना की । इस संप्रदाय की मुख्य आधार शिला चारित्र्य ही है । जिसमें शील चारित्र्य का भंग हो तो वह समाज में रुक सकता ही नहीं । मानव मात्र की पहचान ही चारित्र्य है । यह न हो तो पशु ही मानना चाहिए । जैसे रामायण में कहा गया है कि "चारित्र्यवानयं पुरुष: मानव :" यदि पुरुष में चरित्र न हो तो वह मानव कहने लायक ही नहीं है । अन्यत्र शिथिलता चल सकती है लेकिन चरित्र के विषय में समाज भी चलाता नहीं है यदी समाज चला ले तो वह समाज ही फेंका जाता है । उसका अध: पतन हो जाता है । पतित समाज को बचाने का एक ही उपाय है कि चारित्र्य सुरक्षित हो । चारित्र्यहीन व्यक्ति की रक्षा करना सबसे बडा पाप है । ऐसे पाप से वर्तमान समाज तथा जनता की रक्षा हो ऐसी परमेश्वर भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई - २००५

(१६ अप्रैल २००५ श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर जि. गांधीनगर दशाब्दि महोत्सव पर पदार्पण ।

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबाला जि. महेसाणा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
३. प.भ. नियमकुमार ठक्कर के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण, सेटेलाइट ।
प.भ. दिव्येशकुमार एन. ठक्कर के यहाँ पदार्पण, बोपल ।
प.भ. नटवरलाल जे. पटेल के यहाँ पदार्पण, गांधीनगर अहमदाबाद हाइवे
७. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज सत्संग सभा में पदार्पण, नवावाडज ।
८. कडी गाँव में पदार्पण ।
९. धमासणा गाँव में श्री कष्ट भंजन देव की प्राण प्रतिष्ठा स्वहाथों से ।
१०. प.भ. दशरथभाई पुस्त्रोत्तमदास पटेल के यहाँ महापूजा की आरती उतारने पधारे, साबरमती ।
११. प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज के उपनयन संस्कार स्व हाथों से सम्पन्न किये ।
१२-१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज-कच्छ पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल अहमदाबाद मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।
१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल अहमदाबाद मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से किये ।
१६. नारायणनगर (कनीज-जेतलुप देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. अल्पेश अश्विनभाई के यहाँ पदार्पण - सोलारोड ।
१७. प.भ. बाबुभाई अम्बालाल पटेल के यहाँ पदार्पण - सोलारोड ।
प.भ. मुकेशकुमार नटवरलाल पटेल के यहाँ पदार्पण साबरकांठा ।
१८. कुकरवाडा गाँव में प.भ. भक्तिभाई रामाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
विहार गाँव में प.भ. बहेचरभाई उमेददास पटेल के यहाँ कथाकी पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण तथा प.भ. केशवलाल विठ्ठलदास पटेल के यहाँ गंगा पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर मानगढ (ता. हणवद, मूली देश) के मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२१. दिल्ही श्री स्वामिनारायण मंदिरमें दर्शनार्थ पदार्पण ।
दिल्ही में प.भ. जनकभाई टांक (कच्छ खंभरीवाला) के यहाँ पदार्पण ।
२०-२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार (कनखल-शंकराचार्य चौक) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर (जि. गांधीनगर) पाटोत्सवमें पदार्पण ।
प.भ. कमलेशभाई (मंदिर के गौड़) के यहाँ यज्ञोपवित प्रसंग पर पदार्पण - नवावास हाथीखाना ।
२६. प.भ. भीखाभाई भावसार श्री स्वामिनारायण मुद्रण में पूजन विधि प्रसंग पर पदार्पण शाहीबाग-दूधेश्वर रोड ।
२७. रणछोडपुरा (ता. विजीपुर) में प.भ. शंकरदास पटेल के यहाँ तथा अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव स्व हाथों से किये ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर-घनश्यामनगर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से किये ।
प.भ. रमेशचंद्र शंकरलाल गज्जर तथा प.भ. बाबुभाई के यहाँ पदार्पण ।
२९-३१. वीड़ासर (कच्छ-भुज) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से किये ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

स्वामिनारायण संप्रदाय की गुरु परंपरा

-गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी, बापुनगर)

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान वडताल के अठ्ठारहंवे वचनामृत में प्रश्न करते हैं कि सत्संगियो को क्या क्या जानने योग्य है ? इस उत्तर में स्वयं कहते हैं कि यह हमारा संप्रदाय उद्धव सम्प्रदाय है । इसकी परम्परा को जानना चाहिए । दूसरी तरफ गुरु परंपरा को जानना चाहिए । वह कैसे तो उद्धव जी ही रामानंद स्वामी के स्प में थे । वही रामानंद स्वामी रंगक्षेत्र में स्वप्न में साक्षात् रामानुजाचार्य द्वारा वैष्णवी दीक्षा प्राप्त किये । इसलिए रामानंद स्वामी के गुरु रामानुजाचार्य थे । उन्ही के हम शिष्य हैं । इस प्रकार गुस्परंपरा को जानना चाहिए ।

बाद में धर्मवंशी आचार्य की परंपरा के विषय में श्रीहरि चरित्रामृतसागर में तथा स्वामिनारायण संहिता ग्रंथ के आधार पर अधोनिर्दिष्ट गुस्परंपरा है । श्रीकृष्ण भगवान असुरों का बध करके पृथ्वी के भार को उतारा और अन्तर्ध्यान होते समय उद्धव जी को मोक्ष संबन्धी ज्ञान देकर बद्रिकाश्रम में श्री नरनारायदेव के समीप रहने की आज्ञा की । जिससे उद्धवजी श्रीहरिका गुणगान करके अनंत जीवों को तारते थे । उसी समय मोक्षज्ञान का अधिकारी एक पवित्र ब्राह्मण उन्हे मिला । उनका नाम सोम शर्मा था । वही सोमशर्मा दक्षिण देश में विष्णुपुरी गांव के कृष्णशर्मा नामक एक ब्राह्मण का पुत्र था । सोमशर्मा प्रथम ब्रह्मविद्या पढने के लिये नासिक में नीलकंठ नामक वेदशास्त्र सम्पन्न तथा सुशील ब्राह्मणको गुरु बनाकर मोक्ष संबन्धीज्ञान प्राप्त करने हेतु वहां पर पधारे । तीर्थो में घूमते हुए बदरिकाश्रम पहुंचे । विशाला का दर्शन किये । मेरुतीर्थ में उद्धवजी से भेंट हुई । शुकदेवजी भी साथ में थे । उद्धवजी के चरण में वह ब्राह्मण गिर पडा । मेरी काल, माया जागतिक प्रपंच से रक्षा करें । तब उद्धवजी ने सभी वृत्तांत पूछा । ज्ञान का बोध कराकर धर्म-भक्ति, ज्ञान, वैराग्य का भी उपदेश किया, इस प्रकार भागवती दीक्षा प्रदान करके अष्टाक्षर मंत्र का जप करने से शोम शर्मा की भ्रांति चली गयी और हृदय में प्रकाश हुआ । गोलाक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर आदि धामों का दर्शन करके परब्रह्म का दर्शन करके आनंदित रहने लगे और निर्मल आत्मस्वस्प से जागतिक व्यवहार से मुक्त हो गए इसीलिए उसका नाम आत्मानंद पडा । बाद में उद्धवजी ने भगवान को प्रसन्न करने हेतु उद्धवजी को आज्ञा करते हुए कहा मथुरा, वृन्दावन, द्वारका, अयोध्या, जगन्नाथपुरी इत्यादि पुण्यक्षेत्रों में घूमकर भागवत धर्म का प्रसार करते थे ।

पृथ्वी पर धर्म भक्ति को प्रगट करके सभी में मोक्ष की प्रेरणा देना मेरे लिए कार्यसिद्धि मिली है वैसे ही तुम्हारे शिष्यों को मिलती रहेगी यही शिष्यपरंपरा का प्रतिफल है ऐसा उन्होनें आशीर्वाद दिया । तुम्हारी परंपरा का उच्छेदन करने वाला राजा या रंक सभी निर्बीज हो जायेंगे । तुम्हारे द्रोही का नाश करनेवाला एक राजा होगा । उद्धवजी की आज्ञा शिरोधार्य करके मथुरा से लेकर अनेकों तीर्थोमें घूमते हुए द्वारका में आकर समुद्र के तट पर गोपेश्वर मंदिर में रहने लगे । ये आत्मानंद मुनि का शिष्य गोविन्दमुनि समाधिनिष्ठ कहे जाते थे । उनके शिष्य आनंद मुनि शिष्य भी प्रतापी थे- आनंदमुनि के शिष्य गोपाल मुनि हुए । उनके भी शिष्य दूसरे आत्मानंदमुनि समाधिनिष्ठ हुए । वे समाधि में अपार निरामय तेज को देखते रहते ओर उसी में आनंद मानते ।

दूसरे आत्मानंद स्वामी का संक्षेपमें वृतांत देखें तो चतुर्वेदी मोढ ब्राह्मण निराकार तेज ही कृष्ण है । इस प्रकार गुरुने परमात्माके दिव्य आकार का खंडन किया । इसलिए उन गुरु का त्याग करके रामानंद स्वामी साकार उपासक गुस्की शोध में घूमते हुए दक्षिण भारत के श्रीरंग नामक तीर्थ में आये । वहां तीन मास की साधना

के बाद चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन प्रात:काल में स्वप्न में रामानंद स्वामी को रामानुजाचार्य का दर्शन हुआ । पूर्व का उद्धव जानकर रामानुजाचार्य ने रामानंद स्वामी को वैष्णवी दीक्षा दे दिया । सत्संग की शुद्ध दिशा देकर कहे कि आपके शिष्य आपके वचन से भवसागर से तर जायेंगे । पात्र देखकर श्रीकृष्ण भगवान का मंत्र देना । उन्हे भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन होगा । बाद में भगवान श्री कृष्ण ने श्री राधिका के साथ तेजपुंज युक्त अपना दर्श दिया । भगवान की आज्ञा से सत्शास्त्रों में प्रमाण स्म उद्धव सम्प्रदाय की स्थापना की । आश्रितों को धर्म सहित भक्ति करने का उपदेश करने लगे । प्रयाग में भक्ति को भी शरण दीक्षा देकर उपदेश किये । धर्म देव को दीक्षा देकर कृष्ण भक्ति प्रचार करने की आज्ञा की । धर्म देव अपनी पत्नी द्वारा स्त्रियों को मंत्रोपदेश करवाते थे । संत-गृहस्थ सभी रामानंद स्वामी को गुरु मानते थे ।

दुर्वाशा के श्राप को सत्य करने हेतु, एकांतिक धर्म की स्थापना करने हेतु शरणागतियों का आत्यंतिक कल्याण करने हेतु धर्म भक्ति के घर छपैया में विक्रम सं. १८३७ चैत्र शुक्ल ९ के दिन अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए । ये भगवान ११ वर्ष की उम्र में गृहत्याग करके ७ वर्ष तक वनविचरण करके लोज गांव में पधारे । पीपलाणा गांव में रामानंद स्वामी से मिलन हुआ । वि. सं. १८५७ कार्तिक शुक्ल ११ के दिन नीलकंठवर्णी को महादीक्षा प्रदान किये । बाद में जेतपुर में बडा उत्सव करके रामानंद स्वामी ने नारायण मुनि को अपनी गद्दी पर बैठाकर सभी को इन्हीं की आज्ञा में रहने को कहा । उद्धव संप्रदाय स्वामिनारायण संप्रदाय के नाम से जाना गया । छपैया में जब घनश्याम महाराज बाललीला कर रहे थे उसी समय नारद मुनि वहां आये और वेणु बजाते हुए प्रभु का गुणगान करने लगे । प्रभो ! आप अपने भ्रातृपुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी को दत्तक लेकर उन्हे आचार्य पदासीन करेंगे ।

नारद मुनि के वचन को सत्य करने के लिये सत्संग की स्थापना करने के बाद भगवान स्वामीनारायण ने वडताल गांव में सभा में देश विभाग का निर्देश देते हुए यह कहा कि वडताल भारतका दक्षिण देश तथा अहमदाबाद उत्तर देश के स्म में जाना जायेगा । अपने बडे भाई रामप्रताप के पुत्र अयोध्योप्रसादजी महाराज को तथा छोटे भाई इच्छाराम के पुत्र रघुवीर महाराज को वेदोक्त विधि से दत्तक स्वीकार करकें गादी का आचार्य बना दिया । बाद में स्वयं गद्दी पर बैठाकर आरती उतार कर आज्ञा की कि सभी त्यागी-गृही अपने विभाग के आचार्यों को गुरु के स्मर्में पूजन करना और गुस्मंत्र-लेना । उनकी पत्निया स्त्रियों को मंत्र दीक्षा देगी । उन्हीं की आज्ञा में सभी को रहना है । हम स्वयं धर्मवंशी आचार्य के स्म में सभी की सेवा पूजा स्वीकार करेंगे । इस प्रकार असंख्य जीवों का कल्याण किया । आचार्य के नियम बनाये और उस आज्ञामें रहने हेतु बल दिये । अहमदावाद नरनारायणदेव पीठस्थान के धर्मवंशी आचार्य परम्परामें सातवें विद्यमान आचार्य प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री उत्तर देश विभागके धर्मधुराको संभाल रहे हैं । इसी प्रकार दक्षिण देश वडताल श्रीलक्ष्मीनारायणदेव पीठस्थान के धर्मवंशी आचार्य परंपरामें नवमें आचार्य के स्मर्में प.पू.ध.धु.आचार्य श्रीराकेशप्रसादजी महाराजश्री सत्संग की धर्मधुरा संभाल रहे है ।

श्रीजी महाराज ने आचार्य पद स्थापन किया, गद्दी पर धर्मवंश ही हो ऐसा नियम किया । धर्मकुल में से कौन गद्दी पर बैठने योग्य है यह सभी निर्धारण स्वयं वर्तमान आचार्य महाराजश्री करते है । इसमें प्रेरणा स्म श्रीजी महाराज ही होते हैं । अनंतकोटि ब्रह्मांड का व्यवस्थापन करनेवाले स्वयं भगवानश्री स्वामिनारायण अपने सत्संगियो की देखभाल तो करेंगें ही ? इसलिए जब जिस समय जो धर्मवंशी विप्र गद्दी पर बिराजमान

हो, उनके पास से कोई भी देश के आश्रितको गुरुमंत्र लेना चाहिए । गुरु के समान मानना चाहिए, गुरु पूजन करना चाहिए । गुरुपूर्णिमा के दिन भी खुद अपने आचार्यश्री का पूजन करना चाहिए । संप्रदाय में मात्र दो ही धर्मगुरुहैं । तीसरे, चौथे, पांचवे..... ऐसे ही आगे चलकर जिस को भी धर्मगुरु बनना हो वे सभी खुद अपने आप धर्मगुरु बने । श्रीजी महाराज के द्वारा धारण करवाई हुई लाल पगड़ी तो सिर्फ कालुपुर मंदिर सभामंडप में प्रसादी की पीठ पर बिराजमान श्रीनरनारायण देव पीठाधिपति तथा वडताल मंदिर के सभामंडप में सनातन आचार्य श्री की पीठ पर विराजमान श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति के शिर पर शोभायमान होती है ।

सच्चे संत तो वही हैं जो अपने पास आने वाले हरिभक्त को गादी पर बिराजमान आचार्यश्री के गुरु की पहचान कराते हैं । वडताल देश में से स्थान परिवर्तन करके कोई सत्संगी अहमदाबाद देश में स्थायी हो तो गुरुमंत्र लेने की फिर सेजसुरत नही होती । परंतु गुरुभाव अहमदाबाद देश के आचार्यश्री में रखना होता हैं । इसी तरह उससे उल्टा परंतु ऐसा ही समझना । इसी तरह पहले के आचार्यश्री के पास गुरुभाव विद्यमान गादी पर बिराजमान आचार्यश्री में रखना यही शास्त्रोक्त सच्ची समझदारी हैं । जो कोई भक्तजन ऐसा कहते है के मेरे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान हैं उनको स्वामिनारायण भगवान द्वारा अपना कल्याण की चाहना हो तो संप्रदाय के अनेक शास्त्रो के अनुसार लिखे हुए उपरोक्त बात मानने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं हैं, और जो न माने तो संप्रदायकी एकसूत्रता के बंधारण को तोडकर ऐसे भक्तजन इष्टदेव का निश्चित द्रोह कर रहे हैं । इसलिए श्रीहरि का द्रोह नहीं करना चाहिए । परंतु श्रीहरि खुश हो जाए ऐसी सूक्ष्म बुद्धि से सोचकर गुरु परंपरा समझकर उस तरह करने में ही जीवन का कल्याण हैं । स्वामिनारायण संप्रदाय में गुरु खोजने नहीं पडते । इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने ही अपने आश्रितजन के लिए धर्वंशी आचार्य परंपरा स्थायी करके सबको गुरु खोज दिये ।

"पण छेल्लो छे आ जे उपाय रे,
बहु जीव तरशे आ मांय रे,
धर्मवंशी आचार ज धार्या रे,
गुरु करी गादी ये बेसार्या रे,
धर्मकुल ने जे अनुसरे,
त्यागी गृही नर कोई नार,
परिश्रम विना ते पामशे,
अपार भवनो पार । "

-इष्टदेव श्रीस्वामिनारायण भगवान (पुरुषोत्तमप्रकाश, निष्कुलानंद काव्य)

निवृत्ति में प्रवृत्ति

समग्र सत्संग जानता है कि अपने निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने निवृत्तिकाल में सम्पूर्ण समय अपने शुभ संकल्प के समान संप्रदाय का अद्वितीय आयोजन "श्री स्वामिनारायण म्यूजियम" (नूतन निर्माणाधीन) के निर्माण तथा संचालन में व्यस्त रहेंगे । यह आयोजन जल्दी से प्रगति के मार्ग पर है ।

जिससे अब प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के स्थल पर अपनी आफिस में विराजमान होंगे । प्रात : ९-०० से ११-०० बजे तक वहाँ ही दर्शन करने का लाभ मिल सकता है।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
टर्फ स्कूल के सामने, ए.इ.सी. नारायणपुर के पीछे,
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ टीले फेक्स : २७४९९५९७

अति भव्यता एवं दिव्यता के साथ प.पू. लालजी महाराजका उपनयन संस्कार संपन्न

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी, बापूनगर)

धर्मकुल की परंपरा में हिन्दू शास्त्रों मे जितने संस्कार बताये गये है वे सभी वेदोक्त विधि से संपन्न किये जाते है। उस में भी धर्मवंशी आचार्य में सत्संग समाज की कुटुंब भावना दृढ होने से सभी संस्कार सत्संग के बीच में किये जाते हैं। ता. ११-५-०५ के दिन अक्षय तृतीया ११-५-०५ को शुभ पर्व के अवसर पर कालूपुर मंदिर के प्रांगण में ही प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री एवं निवृत्ताचार्य महाराजश्री की उपस्थितिमें प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसाद का उपनयन संस्कार संपूर्ण वेदोक्त विधि से संपन्न हुआ।

इस प्रसंग के अन्तर्गत ता. १०-५-०५ को प्रात ८ बजे गणेश स्थापन, कलशपूजन, मातृकास्थापन, नांदीश्राद्ध, ग्रहस्थापन, प्रधान देवता स्थापन, इष्टदेव-कुलदेव पूजन तथा तैल हरिद्रालेपन किया गया। ता. ११-५-०५ के दिन प्रात ८-११ बजे तक उपनयन संस्कार वेदविधि से तथा समावर्तन विधि भी सम्पन्न की गयी। मंदिर के प्रांगण में मंडप सुन्दर ढंगसे बनाया गया था। उपनयन संस्कार विधि का उपस्थित समस्त सतसंग समाज ने दर्शन किया। इसीलिए मंदिर के प्रांगण में संस्कार किया गया। भव्य स्टेज बनाया गया था। स्टेज पर ही कुंड में अग्निदेव का स्थापन किया गया था। लालजी महाराज श्री ने पलाशदंड, मूंज की मेखला, कौपीन आदिके द्वारा बटुक ब्रह्मचारी वेश धारण किये थे। आपके दाहिने स्कंध पर यज्ञोपवीत सुशोभित हो रहा था जिससे आप साक्षात् घनश्याम महाराज लग रहे थे। ऐसा दिव्य दर्शन सभी को हो रहा था। प.पू.लालजी महाराजश्री जब अपने माताजी के पास भिक्षा ग्रहण करने गये उस समय उनके गोल नाभि मंडल का दर्शन करने से पंक्ति याद आ रही थी -

तारी मूर्ति लागे छे मने प्यारी रे,
श्री घनश्याम हरि।
तारी नाभि छे गोल गंभीर रे,
श्री घनश्याम हरि।

मंजुकेशानंद स्वामी विरचित इन पंक्तियों की सतत याद आ रही थी। दर्शकों में बहनों को इतना आनंद आ रहा था कि वे स्वयं कीर्तन गान करने लगी थी।

आज सखी आनंद की हेली,
"हरि मुख जोई ने हूं थई छुं रे घेली.....
जे सुख ने भव ब्रह्मा रे इच्छे, तेरे शामळियो मुज ने रे पिच्छे।"

सप्तम भिक्षा में प.पू. गादीवाला ने श्रीजी लिखित शिक्षापत्रीका दान किया। तब प.पू. लालजी महाराजश्री भी मन प्रसन्न भिक्षा प्राप्त करके अत्यानंदित हो रहे थे। बाद में गुरुकी आज्ञा प्राप्त करके काशी गमन के समय बटु का वेश धारण करके सभी को देखते हुए भाग रहे थे। तब उस समय उनके मामा भी पीछे दौड रहे थे। थोडा दूर दौडने के बाद मामा ने हाथ पकडा और मामा के साथ वापस आये। श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रधान पंडित डॉ. वाचस्पति मिश्रजी समग्र विधि के मुख्य थे।

उपवीत संस्कार के बाद प्रसादी के सभा मंडप में दिव्य सभा का आयोजन किया गया। महाराज के तीनो अपर स्वस्रों के सानिध्य में देश देशान्तर के संत-हरिभक्त तथा महाराज श्री के आमंत्रित मेहमान वडताल के पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री के पिता श्री की उपस्थिति से सभा विशेष शोभायमान थी। मंदिर का संपूर्ण प्रांगण सत्संगियोंसे खचाखच भरा हुआ था। प.भ. श्री संजयभाई सोनी के सुपुत्र पू. लालजी महाराजश्री के सखा चि. अर्जुन ने लालजी महाराजश्री को चांदी की यज्ञोपवीत भेट स्वमें पहनाई। वे दोनो पिता पुत्र तथा अग्रगण्य संतो ने आरती का लाभ लिया। सभी संतो ने पुष्पमाला से तथा हरिभक्तों

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

श्री नरनारायण देव में अप्रतिम स्नेह एवं श्रद्धा रखनेवाले अपने पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट

कोई ऐसी सभा नहीं थी जिसमे महाराजश्री ने नरनारायण देव के प्रत्यक्षता की बात न की हो । अहमदाबाद तथा भुज में श्री सहजानंद स्वामी महाराज ने स्वयं अपने बाहों में भरकर श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये हैं। आज भी वही परमात्मा हम सभी के संकल्प को पूरा कर रहे हैं ।

वैशाख शुक्ल पंचमी के दिन श्री नरनारायण देव का भुज मंदिर में प्रतिवर्ष पाटोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है । आज से थोड़े वर्ष पूर्व पाटोत्सव प्रसंग पर आचार्य महाराज श्री संत पार्षदों के साथ अहमदाबाद से भुज पधारे थे । प्रातःकाल अहमदाबाद से निकले । वैशाख की गर्मी तप रहीं थी । प्यास लगना स्वाभाविक था । संतोने कहा महाराज श्री जल पी लीजिये, तो महाराजश्रीने कहा, भुज पहुंचकर नरनारायणदेव का दर्शन करके ही पानी पीऊंगा ।

अपनी गाडी में बिना स्टोपेज के भुज पहुंचनेमें सात घंटा लगता है । क्योंकि कहीं रास्ते में काम चलता रहता है या कहीं ट्राफिक जाम रहती है । लेकिन संत, पार्षदों को इसकी चिंता बनी रहती है कि इतनी गर्मी में महाराज श्री बिना जलपान के कैसे जायेंगे । क्योंकि तीन घंटे की मुसाफरी के बाद सभी ने जलपान किया । थोडे समय बाद भचाऊं शहर आया । भुज पहुंचने में भचाउ से डेढ घन्टा लगता है । संतो को चिन्ता होंने लगी । थोडा नम्र निवेदन करते हुए जलपान करने का निवेदन किया । परंतु महाराजश्री अपने संकल्प में अडिग रहे । संत पार्षद सभी विचारते रह गये । महाराज श्री की श्रीनरनारायणदेव के प्रति श्रद्धा, स्नेह तथा अप्रतिम निष्ठा का सभी को उनमें दर्शन हुआ । अंत में भुज आ गये और सभी सत्संगियोंमे संतो में आनंद की लहर दौड गयी, जिसकी चातक की तरह राह देखे बैठे थे । सभीं महाराजश्री के स्वागत में भुज के महादेव गेट के बाहर अर्थात् श्रीस्वामिनारायण बालमंदिर तथा विद्यार्थीभवन के विशाल प्रांगणमें एकत्रित हुए । प्रवेश द्वार से आचार्य महाराजश्री की कार प्रवेश की कि तुरत ही " सहजानंद महाराज की जय" की जयनाद से सारा आकाश गूंज उठा ।

तुरत ही आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज की शोभायात्रा के लिए संतो ने विनति की उससे पहले भुज मंदिर के महंत स्वामी श्री पूज्य स.गु. हरिस्वरूपदासजी ने पुष्प का हार महाराजश्री को पहनाकर भावपूर्वक स्वागत किया । महाराजश्री को नारियल का पानी पीने के लिए आग्रह किया । महाराजश्रीने पुनः कहा कि, "मैं श्री नरनारायदेव के दर्शन करने के बाद ही जल लूंगा ।" शोभायात्रा में दो घंटे का समय चला गया क्योंकि बीच में आते हुए श्रीजी महाराज के प्रसाद के मंदिर श्री कल्याणेश्वर मंदिर, श्री द्वारिकाधीशजी, श्रीहाटकेश्वरजी और श्री रघुनाथजी के मंदिर में ट्रेकटर से चार बार तो दर्शन करने के लिए उतरना पडा ।

अंतिम में मंदिर गये । और महाराजश्री ने श्रीनरनारायदेव, श्रीराधाकृष्णदेव, श्रीघनश्याम महाराज तथा पंचदेव के दर्शन किये । सभामंडप में पधारकर सभी संतो का हाल समाचार पूछा । एक घंटे सभा चली । पूजन अर्चन के बाद महाराजश्री के साथ आये हुए संतगण ने वक्तव्य देते हुए कहा कि महाराजश्री अहमदाबाद से निकलने के बाद लगभग दस घंटे हो गये अभी तक जल नहीं लिया । उन्हों ने संकल्प लिया था कि श्रीनरनारायणदेव के दर्शन करने के बाद ही जल लूंगा । दर्शन करने के बाद भी जल बिना अपने सामने ये तपोमूर्ति बिराजमनान

हैं।" उसी समय तालियों की आवाज से पूरा सभामंडप गूंज उठा। मनोमन ऐसे तपोमूर्ति महाराजश्री को सौ वंदन।

पूर्व आचार्य महाराजश्री पूज्य तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज जैसे महान तपोमूर्ति के सानिध्य में कुछ क्षण व्यतीत करने के बाद अपना मनुष्य जीवन धन्य हो जाता है। श्रीहरि का दिव्य दर्शन होने से हृदय में शान्ति का अद्भुत अनुभव होता है। जो भी सत्संगी महाराजश्री के सानिध्य रहता हैं वह बहुत ही भाग्यशाली कहलाता हैं। कोई भी धर्म का व्यक्ति महाराजश्री के दर्शनार्थ आता हैं तब महाराजश्रीके प्रभावशाली व्यक्तित्वसे प्रभावित हो जाता हैं।

कच्छ में जब उत्सव प्रसंग आता है तब शोभायात्रा के समय तथा सभामें महाराजश्री का दर्शन करके सभी कृतार्थ होते हैं। एकबार अंजार में उत्सव था। सत्संगी जीवन की पारायण थी। महाराजश्री पधारे हुए थे। अहमदाबाद से प्रातःकाल निकले थे। मध्याह्नमें अंजार पहुंचे। उनकी शोभायात्रा लगभग दो घंटे चली। और फिर सामको कथा में पधारे। उसके बाद भुज के जादवजी नगर में नूतन मंदिर का हिंडोला दर्शन करने पधारे। थोडा भी विश्राम के विना कितना श्रमित रहे होंगे इस की परिकल्पना की जा सकती है। हिंडोला का दर्शन करके ज्यों ही अपनी गाडी में बैठे कि पांच-सात हरिभक्त अपने साथ फोटा खिंचाने का आग्रह करने लगे। थोडा भी विचार के विना दरवाजा खोले और बाहर आ गये, कहने लगे कहां है कैमरामेन ? भक्त तो खूब प्रसन्न हो गये। एक ही नहीं अने कों फोटो लोगों ने खींचा। इतने अधिक कार्यक्रमों के बाद क्षणभर भी जिसे विश्रांति न मिली हो सत्संगी हरिभक्तों को प्रसन्न करने के लिए इस प्रकार कितनें उनके उदाहरण होंगे। इतना अधिक पुरुषार्थ आपने किया जिसका परिणाम सभी के सामने है, यह उदाहरण प्रत्येक पुरुष को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

कच्छ तथा कच्छ के लोगो के लिए तो आप को कितना प्रेम था। एकबार बात के दौरान महाराजश्रीने कहा कच्छ में प्रति पांच वर्ष में दो वर्ष वर्षात अच्छी होती है। बाकी समय दुष्काल हो जाता है। भूकंप, तूफान इत्यादिक प्राकृतिक आपत्तियों को कच्छ के लोग सहन करते रहते हैं। इसलिये पानी के संग्रह की खूब आवश्यकता है।श्रीजी महाराजने भी स्वयं कूआ, तालाब का निर्माण करवाया था। आज सभी को सरकार के साथ यत्किंचित आर्थिक सहयोग करके जलाशयों के लिए तत्पर हो जाना चाहिए। जिससे मानव जीवन एवं पशु जीवन आबाद बन सके।

इ.स. १९७३ से इ.स. १९७५ तक लगातार कच्छमें सूखा पड गया। लोग पशुधन बचाने के लिए इधर उधर भटकने लगे। क्यों कि घास का एक तृण भी कहीं दिखाई नहीं देता था। इ.स.१९८५-८६ में भी ऐसा ही दुष्काल पड गया। उस समय पू. महन्त स्वामी श्रीहरि स्वरूपदासजी ने "श्री स्वामिनारायण सत्संग सेवा संचय" संस्था की रचना करके कच्छ के गांव गांव में राहत का कार्य किया। दुष्काल का समय जल्दी बीत जाय, भविष्य में भगवान की कृपा इस प्रदेश पर होती रहे इस शुभ हेतुसे पूज्य महंत स्वामीने १९८५-८६ में समूह भागवत पारायण का आयोजन किया था। इस विशाल आयोजन में अठ्ठावन यजमान थे। महाराज श्री निमंत्रण का मान रखकर यहां पधारे थे। संप्रदाय की प्रणालिका अनुसार यजमानों ने महाराजश्री को भेंट सौगात चरण में प्रस्तुत की, लेकिन परम कृपालु दयावान प.पू. महाराजश्री के हृदयमें उन पीडित दुःखियों के प्रति अन्तर्हृदय से पीडा का भाव आया। और सम्पूर्ण धनराशि भरचक सभामें सभीके सामने दुष्काल पीडितों को अर्पण कर दी। तब सभी को ख्याल आया कि मानवता के महारथी महाराजश्री के संकल्प को सभी सभाजनों ने आनंदातिरेक के साथ तालियों की गडगडाहट से सन्मानित किया। आप के शुभाशीर्वाद से तथा प्रार्थना से आजसमग्र कच्छ के लोग दुष्काल से उबर गये हैं।

सत्संग सुरभि - प्रभाव पहचान कर बने प्रभवानंद

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

दीव द्वीप में एक बनियां रहता था। देश विदेश मे उसका खूब व्यापार चलता था। एक दिन समुद्र पारकरके जहाज उसकी आई नहीं, प्रतीक्षा करते-करते बारह महीने बीत गये। शेठने मन्नत रखा यदि मेरी जहाज वापस आजायेगी तो मैं जहाज की आधी रकम साधु संतोमें खर्च करुंगा। भगवान की इच्छा से शेठकी मान्यता फलीभूत हुई। जहाज वापस आ गयी और शेठ को खूब फायदा भी हुआ। शेठ नफा में से आधी रकम रखकर आधी रकम लेकर द्वारका के लिए चल दिया।

- रास्ते में उसे समाचार मिला कि लोजपुर में रामानंद स्वामी हैं तो उनका दर्शन करते आगे जांय। शेठ स्वामी के दर्शनार्थ गया। रामानंद स्वामी के चरण स्पर्श करके सामने बैठा। स्वामी ने कहा शेठ ? जहाज सुरक्षित आ गयी न ? शेठ तो आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि उसके मन की सभीबात स्वामीने कह दिया। लाभ-हानि और फायदे की रकम को द्वारका संतोमें देने जा रहे हो इत्यादि। शेठके मन में यह सुनकर काफी प्रभाव पडा। शेठ मन में विचार करने लगा कि ऐसे संत जहां रहते हों वहीं द्वारका है। अब द्वारका जानेकी जरुरत नहीं।

बाद में शेठ तो वहीं रुक गया, और सभी रकम वहीं साधु संतो के लिए सेवार्थ दे दिया। उसी दिन से वह रामानंद स्वामी का शिष्य हो गया। बाद में वहीं पर जाया करता। कुछकाल बीत जानेपर समाचार मिला कि रामानंद स्वामी ने देहत्याग कर दिया है। उनकी जगह पर जो गद्दी पर आये हैं वे स्वामी भी अधिक तेजस्वी हैं। इतना जानकर नवीन गुरुका दर्शन करने हेतु लोज गांव में आया। शेठ ने विचार किया कि रामानंद स्वामीजी तो मेरे मनकी बात कह दी थी, यदि नये गुरुजी भी मेरे मनकी बात कह दें तो मैं इन्हे सच्चा गुरु मानूं !

शेठ श्रीजी महाराज को दंडवत् प्रणाम करके सामने बैठा। श्रीहरिके सामने कई संत हरिभक्त बैठे थे। वहाँ एक पांच वर्ष का बालक भी बैठा था। श्रीजी महाराज तो अन्तर्यामी है, शेठ की सभी बात जान रहे थे। उसे बालक के पास बुलाये ओर कहे "बोल तो गोपाल यह शेठ आया है, इसके मन में क्याहै तूं कह दे।"

बालक कहने लगा। "कौन है यह दीवावाला शेठ ?" यह सुनकर शेठ तो चौंक उठा। चौकन्ना होकर सुनने लगा। बालक कहने लगा और शेठ विचार करने लगा कि रामानंद स्वामी तो मेरे मन की बात कहे थे, महाराज मेरे मन की बात कह सकते है या नहीं ? लेकिन रामानंद स्वामी ने तो अधूरी बात कही थी, बाकी अब मैं कह रहा हूँ। वह यह की शेठ की जहाज सुरक्षित बचकर आजाय तो उसकी आधी रकम साधु-संतो में खर्चे करने का संकल्प किया था। आधी रकम साधु संतो में खर्च नहीं किया। इस प्रकार गुरु के साथ छल किया था। और आज बडा चालाक बनकर महाराज की परीक्षा लेने आया है। इतना कहकर बालक मौन हो गया। शेठ की स्थिति ऐसी हुई कि काटो तो बदन में खून नहीं है।

वह खडा होकर महाराज के चरण में गिर पडा और रोते हुए कहने लगा। महाराज ! महाराज ! मेरा अपराध माफ कर दीजिए। मैं गुरु और संतों को ठगा हूँ। मैं आपकी भी परीक्षा करने आया था। अब मैं अपनी दीन हीनता पर दुःखी हूं। रामानंद स्वामी तो दूसरे के मन की बात जान लेते थे, लेकिन आप तो ऐसे अन्तर्यामी समर्थ पुरुष हैं कि एकपांच वर्ष के बालक से दूसरे के मन की बात बोलवा देते हैं। आप तो धन्य हैं। मेरे ऊपर दया करो। आप ही सच्चा खेल करने वाले हैं। आज ही अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आपके चरणों में साधु संतो के लिये

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

भावि आचार्य का उपनयन संस्कार

- डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)

भारतीय वैदिक परम्परा मे उपनयन संस्कार का उतना ही महत्व है जितना जीवन में आहार और विहार का है भले ही प्रत्यक्ष रूप से आहार तथा विहार स्वास्थ्य लाभ देकर जीवन को पुष्ट करता है, लेकिन यह उपनयन संस्कार परोक्ष रूप से जीवन को पुष्ट करता है । इसमें सारी श्रुतियां स्मृतियां, पुराण तथा दर्शन शास्त्र भी प्रमाणी भूत है। जो ऋषि वर्षोतक इन्ही वैदिक परम्पराओं का आश्रय लेकर अतिपूत हुए और आनेवाली परम्पराओं को धरोहर में वैदिक साहित्य को देते गये । आज भले ही हम उस तरफ दृष्टिपात नहीं करतें क्योंकि हमारी आखों पर भौतिकता की पट्टी लगी है - जिससे हम यथार्थ का दर्शन नहीं कर पा रहे हैं । जब प्रत्येक मानवमात्र अपने मानव धर्म को ही भूल गया हो तब वैदिक परम्पराओं को वह छूभी कैसे सकता है । ठीक इसी परिप्रेक्ष्य में जब सारा समाज अपनी रीति-नीति भूल रहा हो या कतिपय लोग उसे जीवित रखे हो तो आज समाज के प्रखरप्रहरी समाज सुधारक वैदिक रीतियों तथा साम्प्रदायिक नीतियो से जिसका कुल अतिपवित्र है ऐसे भगवान स्वामिनारायण केवंश में निवृत्ताचार्य प.पू. महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी के पौत्र तथा वर्तमान पीठाधिपति १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पुत्र भावी आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज का वैदिक विधि से उपनयन संस्कार संपन्न हुआ । ज्योतिष के अनुसार ब्राह्मण का उपनयन संस्कार अष्टम वर्ष में होजाना चाहिए -

विप्राणां व्रत बन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे धर्म शास्त्रों के अनुसार - अष्टमे वर्षे उपनयीत ।

अर्थात् यदि वेदकाल की तरफगति करना हो या सच्चे संस्कार देना हो तो अष्टम वर्ष में उपनयन कर देना चाहिए । इन सभी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर संस्कार किया जाय तो निश्चित ही बालक बड़ा ही मेधावी होगा । जैसे हीरा कीचड में पडा हो और उसका संस्कार अर्थात् घर्षण कार्यकर दिया जाय तो उसमें चमत्कृति आजाति है । ठीक यही स्थिति आज हमारे सम्प्रदाय के भावी आचार्य जो सभी संस्कारों से पूत हैं तथापि वैदिक विधियों को करने के लिए एवं उत्तम ज्ञान प्राप्ति के लिए उपनयन संस्कार ब्राह्मण का होना चाहिए ठीक उसी काल और मर्यादा में आप का यह संस्कार किया गया हैं । आपके संस्कार काल का जिसने दर्शन किया होगा उन्हें प्रत्यक्ष ही आहार-विहार से जैसे स्वास्थ्य लाभ होता है ठीक वैसा ही लाभ उनके मुखाकृति तथा गुणधर्मो से आंका जा सकता है । ऋषिकुमार और वेदपुरुष जैसे लग रहे थे । ऐसा सौम्य देदीप्यमान स्वरूप देखकर बडा आनंद मिल रहा था, सभी के मन को शांति मिल रही थी, इतने संस्कार से इतना लाभ होता हो तो जब वैदिक परंपराओं के साथ उत्तम अध्ययन, चिन्तन, जपादिक द्वारा तेज आयेगा तब क्या स्थिति होगी ? भौतिकबाद से हटकर आध्यात्मिकता की तरफ गति करनेवाले ऐसे कुलीन शास्त्रज्ञ, वेदप्रचोदित आचरणों से पूत आचार्यकी परंपरा में एक नवोदित सूर्य की तरह आप चमकृत बने ऐसी भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

संस्कृतभाषा

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

संस्कृत भाषा भारत की अति प्राचीन भाषा है । संस्कृत भाषा का इतिहास इस. पूर्व २००० अर्थात् लगभग ५००० वर्ष पुराना है । "ऋगवेद" संस्कृत में रचा गया विश्वकी सर्व प्रथम साहित्य कृति है । संस्कृत भाषा अपनी राष्ट्रिय धरोहर ही नहीं अपितु समग्र विश्व के लिए महत्व का है । पाणिनि द्वारा बद्ध यह संस्कृत भाषा है । इस भाषा का व्याकरण या उसके उच्चारण पर किसी भाषा का प्रभाव नहीं पड सका । यही संस्कृत भाषा की विशेषता है । भारतीय संस्कृति को समझने के लिये संस्कृत भाषा एक अमोघ साधन है ।

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् कहते हैं कि "Sanskrit literature is national in our sense, but its purpose has been universal."

पं. जवाहरलाल नेहरु ने भी कहा है कि " संस्कृत भाषा भूतकाल को जोडने की एक साधन है । अपना उद्धार इसीके आधार पर हुआ है । भारत में जो प्रगति देखने में है वह संस्कृत भाषाकी देन है ।"

संस्कृत भाषा को भारतीय संस्कृति का आधार माना गया है । (The cradle of Indian calture) कहा गया है । रामायण, भागवत, महाभारत, गीता, इत्यादि अपने धर्म ग्रंथ संस्कृत में ही हैं । भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा के कोख से निकली है । इस भाषा द्वारा मानव का संस्कार सिंचित होता है । संस्कृत भाषा अपने जीनव को संस्कार युक्त करती है । सभी के जीवन को धारण करती एवं संचालन करती है । इसीलिये इसे भारतीय ज्ञान की गंगोत्री कहा जाता है । पूजा, पाठ, श्राद्ध, लग्न आदी धार्मिक विधि भी संस्कृत भाषा में ही सम्भव है ।

उपरोक्त धार्मिक ग्रन्थों में भारतीय प्रजाजीवन का उदात्त मूल्य प्रतिबिंम्बित हुए हैं । इन ग्रन्थों में भारत के आध्यात्मिक संस्कृति का प्रतिबिंब पडता है । कालिदास, भवभूति, भारवी, दंडी, आदि जैसे कवियों का उत्कृष्ट साहित्य सर्जन भी संस्कृत भाषा में हुआ है ।

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम् ।
दण्डिनः पद लालित्यं माधे संति त्रयोगुणाः ॥

इन कवियों की कलात्मक कृति भारतीय संस्कृति का महामूल आधार है । अपनी रम्य रत्न कणिका के सुविचार, सुवाक्य इत्यादि मूल संस्कृत भाषा में समाविष्ट है । धर्म के विषय में विशेष प्रतिपादन संस्कृत भाषा में ही है । इस के अलावाँ शिक्षण जगत में संस्कृत का उदात्त स्थान है । जीवन दर्शन को प्रेरणा देते हुए संस्कृत के सूत्र औदार्य है । संस्कृत भाषा भारतीय भाषाओं की जननी है । प्रायः सभी भाषायें संस्कृत भाषा में से निर्गत हैं प्राकृत, प्राकृत में पुरानी गुजराती, पुरानी गुजराती में से नयी गुजराती अपनी मातृभाषा कही जाती है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि भाषाओं के विकास में संस्कृत भाषा का योगदान है ।

राष्ट्रिय एकता तथा अखंडितता को एक सूत्र में पिरोने का काम एक मात्र संस्कृत ही कर सकती है । गुरुदेव ठाकोर कहते हैं कि - "यत्र विस्वम् भवत्येकनीडम्" जहां सम्पूर्ण विश्व एक बन जाता है । यह रमणीय कल्पना भी संस्कृत भाषामें व्यक्त हुई है । विदेशों में भी संस्कृत साहित्य लोकप्रिय हुआ है । संस्कृत साहित्य ज्ञान- विज्ञान तथा बुद्धिमत्ता का उद्यान है । संस्कृत सुभाषित,सूक्ति पंचतंत्र इत्यादि की कथामें जीवन भर को संदेश देने की क्षमता है । जर्मनी में तो संस्कृत साहित्य का बडा संशोधन केन्द्र है । प्राथमिक कक्षाओं में तो हितोपदेश तथा पंचतंत्र की बोधक कथायें पढाई जाती है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा का महत्व संस्कृत साहित्य कराता है ओर गौरव प्रदान करता है । भारतीय संस्कृति

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

जीभ किसकी उत्तम

- साधु भक्तवत्सलदास (तपोवन मंदिर, लींमडी)

एक सुहावनी सन्ध्या । आश्रम के सामने बरगद के नीचे बडे आसन पर गुरुजी बैठे थे । सामने शिष्य वृन्द बैठे थे । जीवन जगत-आनंद के विषय पर चर्चा चल रही थी । चर्चा में पशुओं की बात निकली ।

गुरुने पूछा । सबसे खरतनाक जीभ किस प्राणी की है ?

शिष्य ने उत्तर दिया सर्प की । सांप की जीभ को क्यों खरतनाक माना गया है ? इसलिए कि जहर भरे हुए दांतो के साथ रहती है, साथ रहने से संग का रंग तो लगता ही है । बात तो समझने लायक है । लेकिन सांप से भी खरतनाक जीभ ओर किसी की होती है ? गुरुजीने पुन: पूछा ? शिष्यविचार करने लगे । हमें लगता है कि पागल कुत्ते की जीभ सबसे खरतनाक कही जा सकती है । एक दूसरे शिष्य ने उत्तर दिया । गुरु ने कहा, इसका क्या कारण हो सकता है ? कारण यह कि पागल कुत्ते की जीभ से सतत जहरी लार टपकती रहती है । ऐसा कुत्ता जिसे काटे वह स्वयं तो परेशान होता है, दूसरे को भी परेशान करता है । इसलिए सबसे भयंकर । यह भी सही । इससे भी खतरनाक किसी की जीभ हो सकती है ? नहीं इससे भयंकर जीभ अन्य किसी की नहीं हो सकती । (गुरुजी ने कहा लो अब मैं समझाता हूं । दूसरे की निन्दा करनेवाले मनुष्य की जीभ सबसे भयंकर होती है । सांप काटे तो वही मरता है; यद्यपि ऐसे मनुष्य की जीभ तो अनेकों को अधमुआ कर देती है । कुत्ता तो जिसके सम्पर्क में आवे, जिसे काटे वही परेशान होता है । जब कि बदनामी करने वाला तो अनेकों का निकंदन कर देता है । इसके अलावाँ सांप को तथा पागल कुत्ते को समझना सरल है । जब कि खराब बोलनेवाले को समझना बडा मुश्किल है । लेकिन अनुभव से समझा जा सकता है । कोई मनुष्य आपके पास बैठकर ऐसा आप के कान में जहर घोलकर चला जाय कि उसे धोना कठिन हो जाय ।

ऐसी बदनामी की बातों में विचित्रता यह है कि बोलने वाले या सुननेवाले को इससे कुछ लेना देना होता ही नहीं; तो भी वह व्यक्ति बात को तूल देकर कुछ खट्टी कुछ मीठी चटाकेदार बनाकर कहता है और वह सुनता है, अब परिणाम कितना अच्छा होगा वही जान सकता है । बात यहीं पूरी नही होती । सुनने वाला अपने कान में आयी हुई बात को जब तक दो चार के कान में न डाल आवे तब तक उसे चैन नहीं रहता । सामने वाले की बात सत्य है यह आप नहीं बोल सकते । आप शांति से सुनो । आपके इस मौन श्रवण से कितने निर्मल चरित्र पर काली दाग जमने जा रही है ? ऐसा विचार आया कि सुननेवाले तथा सुनानेवाले दोंनो का विचार एक संगत बनकर अन्य को क्या क्या गुल खिलायेगा ।

निन्दा करनेवाला कभी थकेगा ? लेखकने पूछा, निन्दा सुननेवाला जब थक जायेगा तब । बोलने वालोकी बात तो सुननेवाला कोई तो चाहिए ? एकदम अविवेकी कैसे बना जा सकता है ?

वाह ? किसीकी बुरी बात सुनना यह विवेक ? किसी की बात न सुनना यह अविवेक ? कैसी विडम्बना ? जब यह समझमें आजायेगी कि इस प्रकारकी बात करनेवाला कितना दोषी है ।

इस संवाद को पूर्ण करने के लिए इतना और कहूंगा कि किसी की बदनामी सुननेवाला कोई भाग्य से ही चुप रहता है । वह तुरंत ही बोलनेवाला होकर अपने आप इस पापमें भागीदार बन जाता है । इसलिये प्रिय भक्तजन स्वामिनारायण भगवान ने वाणी और पानीको गारके ही व्यवहार करने की आज्ञा दी है ।

भगवान श्री स्वामिनारायण एवं जेतलपुर धाम

- साधु अभिषेकप्रसाददास गुरु नारायणवल्लभदास

"धन्य धन्य जेतलपुर गाम,
वहाले कर्युं जेने निज धाम ।
तीयां मरे पापी नर नार,
ते तो न जाय जम ने द्वार ।"

अहमदाबाद से दक्षिणदिशा में १५ कि.मी. दूर अहमदाबाद बम्बई हाइवें पर जेतलपुर गांव है । अहमदाबाद से जेतलपुर जाते समय जेतलपुर में मुख्यमार्ग से दाहिनी तरफ ऐतिहासिक स्थल-गढी, वाव, देव सरोवर, फूलवाडी, यज्ञशाला, अक्षर महोलवाडी इत्यादि है । बांई तरफ श्री स्वामिनारायण भगवान का दिव्य शिखरी मंदिर, श्री स्वामिनारायण गुरुकुल, श्री एम. पी. पंडया हाइस्कूल तथा गांव है । गांव का मुख्य व्यवसाय राइस मिल एवं खेती है । खेती में धान मुख्य रूप से उगाया जाता है ।

इतिहास में यह गांव तीन विभाग में बटा हुआ है । तलपद, बांटो तथा शेढी, "गुजरात सर्व संग्रह" पुस्तक में इ.स.१४२० में जमीन वसूलात के विषयमें खूब झगडा हुआ । उस समय अहमदशाह बादशाहने फरमान किया कि लोग लगान दैंगे और जो लोग लश्करी नौकरी करेंगे ऐसे जमीनदारों को उनकी जमीन का चौथा हिस्सा वंश परम्परा के पीछे दिया जायेगा । उस समय से जो हिस्सा अलग रखा जाता उसे बांटो कहा जाता, बाकी हिस्से को तलपद कहा जाता वह सरकार का होता । इतिहासकार रत्न मणीराव भीम राव ने लिखा है कि जहांगीर बादशाह ने गुजरात को सूबा के रूपमें अपने बेटे शाहजहां को नियुक्त किया था । उस के नीचे सफीखान नायब सूबा था । किन्तु सत्ता की लालसा में शाहजहाँ ने अपने पिता को कैद करके परेशान किया फिर भी सफीखान जहांगीर का वफादार ही रहा । इ.स. १६२३ में शाहजहां के सैन्य में तथा सफीखान के सैन्यकें बीच में जेतलपुर में खूब भयंकर संग्राम हुआ । जिस में सफीखान की विजय हुई । उस विजय की याद में मुगल बादशाह जहांगीर ने सफीखान को गुजरात का मुख्य सूबा बना दिया । सफीखान ने जेतलपुर को गढ,सैफबाग, तालाब (देवसरोवर), महल इत्यादि का निर्माण करवाया था । जिसका उल्लेख अहमदी में देखने को मिलता है । सफीखान का बधाया हुआ किला "जेतलपुर का गढ" के रूप में जाना जाता है । किले में तोप रखने की खिडकी थी । ३५० वर्ष पूर्व यह किला बना था । लेकिन आज खंडहर के रूप में दिखाई देता है ।

बहुत सारी ऐतिहासिक घटनायें जेतलपुर के साथ जुडी हैं । इस गांव का नाम जेतलपुर शाही पडा । जानने योग्य बात है । देव सरोवर से पश्चिम दिशा में एक इन्द्रोडिया नामक गांव था । उसके बगल गाढा जंगल था । इसलिये उससे रक्षा हेतु भय बना रहता था । परिणाम स्वरुप उस गांव के लोग स्थलान्तर किये और जहां जेतल नाम की रबारिनबाई का निवास था वहां आकर इन्द्रोणिया गांव के लोग बस गये । बाद में "जेतलबाई" के नाम से इस गांव का नाम जेतलपुर पडा । जिसका उल्लेख ऐतिहासक पुस्तकों में या खातावहीं में देखां जा सकता है । इससे भी महत्व की बात यह है कि सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने जेतलपुर गांव को अपनी कर्म भूमि, मोक्षभूमि तथा तीर्थ भूमि बनाये । जिससे जेतलपुर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के धर्म इतिहास में अमर हो गया । भगवान श्री स्वामिनारायण ने सामाजिक कुरिवाज, अहिंसामय यज्ञ, मोक्ष का सदाव्रत, महोत्सव, धार्मिक जागृति, इत्यादि का श्री गणेश भी इसी गांव से किया । इस जेतलपुर गांव में क्रमशः ऐतिहासिक तथा धार्मिक घटनाओं से गुजरात की धरतीपर गुजरात की यशोगाथा के समान देदीप्यमान हो रहा है । एक यात्राधाम के रूप में प्रशस्ति को प्राप्त हो चुका है ।

जेतलपुर में भगवान स्वामिनारायण वि. सं. १८६२ में भक्तजनों के आमंत्रण पर सर्व प्रथम जेतलपुर पधारे थे । जेतलपुर

वासियों ने धूमधाम से स्वागत किया। अग्रगण्य भक्त महिलाओं ने जिसमें अग्रण्य गंगा मां थी। मस्तक पर कलश श्रीफलसे सुशोभित लेकर स्वागत की थीं। भक्तों ने अक्षत, चंदन, गुलाल तथा पुष्पहारों से पूजन करके सन्मान किया था। भगवान स्वामिनारायण संत - पार्षदों के साथ देवसरोवर के किनारे अक्षरमहल में आकर बिराजमान हुए। दूसरे दिन देवसरोवर में स्नान करके भगवान श्री हरि पश्चिम दिशा में स्थित वाडी में पधारे। वाडी में अनेक वृक्षो को देखकर खूब प्रशंसा किये। उस समय गांव के पाटीदार गंगादास मुखी, आशजीभाइ, जीवणदास इत्यादि प्रार्थना किये कि, हे भक्तवत्सल भगवान ? यह जमीन आपके चरणों में सप्रेम अर्पण करते है।

जेतलपुर में अहिंसामय यज्ञ - भगवान श्री हरिने किया। इस यज्ञमें हजारों नर-नारी भक्तजनोंने सेवा किया। इस यज्ञ में एक पतित गणिका (वेश्या) गेहूं पीसने का कार्य किया था। भगवान ने उसका भी कल्याण कर दिया। जेतलपुर के इस यज्ञ में श्री स्वामिनारायण भगवान ने हजारो ब्राह्मणों को अठ्ठारह दिन तक ब्रह्मभोजन करवाकर तृप्त किया। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद भक्तोंने वाडी में वट वृक्ष के नीचे एक सुन्दर झूला बनाया। जिस पर श्रीहरि बिराजमान हुए थे और स.गु. आनंदानंद स्वामी ने झुलाया था। इस समय भक्तों ने श्रीजी महाराज को पुष्पहार समर्पित करके धन्यता का अनुभव किया था। कोई गीत गा रहा था, तो कोई जय जयकार कर रहा था। इस प्रकार भगवान ने अपने चरणों की रज से इस धरती को पावन किया था। प्रत्येक घर में श्रीजी महाराज सैंकडोबार पदार्पण किये होंगे। ऐसा यह गांव जेतलपुर है।

इस गांव का वर्णन जितना भी किया जाय कम ही है। समय वीतते सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने महासमर्थ स.गु. आनंदानंद स्वामी द्वारा तीन शिखरी मंदिर का निर्माण कराया। जिस में महाप्रतापी रेवती बलदेवजी एवं हरिकृष्ण महाराज को सं.१८८२ में फाल्गुल वद ८ के दिन स्वयं श्रीजी महाराज ने प्रतिष्ठित किया। आज भी जेतलपुर में हजारों भक्तजन पदयात्रा द्वारा तथा वाहन द्वारा देव दर्शन करके अपने संकल्प को श्रीहरिके चरणों में समर्पितकर रहे हैं। और स्वस्वार्थ की सिद्धि कर रहे हैं।

पृष्ठ १३ से आगे

संस्कृतभाषा

के दीप को प्रगट करने तथा प्रज्ज्वलित करने का अलभ्य साधन संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा ज्ञान-विज्ञान का साधन है। इसलिये इसके महत्व का आंकलन नहीं किया जा सकता।

संस्कृत भाषा में वैदिक साहित्य अति प्राचीन है। इस साहित्य में चतुर्वेद, उपनिषद, आरण्यक, इत्यादिका समावेश होता है। संस्कृत ज्ञान - विज्ञान का सम्पूर्ण आधार, व्याकरण को पुष्ट करने वाली, मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा को समृद्ध करने वाली भाषा है।

अपने सम्प्रदाय में तो नरनारायण पीठस्थान से तो संस्कृत पाठशाला चलती है। जिस पाठशाला ने अनेको विद्वानों को देश - विदेश में प्रकाशित की है। आज भी पाठशाला में करीब ७० जितने साधु एवं ब्राह्मण विद्यार्थी विद्याभ्यास विद्वान पंडितों द्वारा कर रहे है।

पृष्ठ ८ से आगे

अति भव्यता एवं दिव्यता के साथ
प.पू. लालजी महाराजका उपनयन संस्कार संपन्न

ने भेंट सौगत देकर लालजी महाराज का सत्कार किया था। नई प्रकाशित पुस्तकों का तथा VCD का विमोचन किया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, वडताल, जेतलपुर, भुज, मूली, गांधीनगर इत्यादि नगरों से संत महंत पधारे हुए थे।

प्रासंगिक प्रवचन किये थे। महाराजश्री तीनो अपरस्वस्म में सभी सभाजन को आशीर्वचन दिये थे। प.पू. महंत शा.स्वा.निर्गुणदासजी ने सभा का संचालन किया था। देव दुर्लभ प्रसाद को लेकर सभी तृप्तिका अनुभव करते हुए विसर्जित हुए थे।

स्नेह बिना का संगीत

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

जो भी सत्कर्म करे, भजन करे तो भगवान को याद करके खुश करने के लिए करिए । तो ही सफलता मिलती हैं, नहीं तो निष्फलता मिलती हैं । बहुत ही सुंदर कथा हैं । नारदजी को गर्व अच्छा नहीं लगता, कोई लश्कर का बडा अधिकारी खडा हो उसे गर्व शोभता हैं । वह दोनो हाथ को जोडकर माला लेकर खडा हो तो उसे यह स्थान अनुकूल नहीं आता हैं। लेकिन स्वाब से खडा हो तो अच्छा लगता हैं ऐसे ही कोई महात्मा पुस्त हाथ में माला लेकर खडा हो तो उसे अच्छा लगता हैं ।

नारदजी को संगीत का गर्व हुआ । मुझे जो वीणा बजाने आती है ऐसी दुनिया में किसी को भी नहीं आती होगी । परमात्मा को विचार होता है नारदजी हमारें हैं, सच्चे महात्मा हैं, परंतु उनमें यह गर्व आया हैं यह शोभता नहीं हैं, वह निकालना पडेगा ।

एक बार परमात्मा के पास द्वारका में विशाल सभा हुई । इस सभा में संगीतकार बहुत प्रकार के उपस्थित थे । बडे-बडे संगीतकार इस सभामें आये हुए थे ।

द्वारिकाधीश की कचहरी में वे संगीतकार बिराजमान थे । संगीत के जानकार नारदजी को ऐसा लगा इन सभी के आगे ऐसा प्रभाव डालू कि सभी लोग पीछे पड जाए ।

भगवान के सोने के सिंहासन के बगलमें एक बन्दर बैठा था जिसे देखकर ऐसा हुआ कि इस सभामें बन्दर को स्थान क्यों मिला होगा । सिंहासन के बगल में बैठे सभी विचार करने लगे कि द्वारिकाधीशको ऐसी टेव है । पहले नारदजी आये और बीणा वादन प्रारंभ किये । नाना प्रकार का रोहावरोह ताल निकाल सभी सभाजन को मंत्र मुग्ध कर दिये सभी नारदजीको वाह वाह कहने लगे । लेकिन ठाकुरजी के मुख की मलीनता हास्य में बदली नहीं । नारद जी को बडा आश्चर्य हुआ । इस प्रकार सुरम्य संगीत सुनकर कालानाग भी मदमस्त हो जाता हैं लेकिन नारायण क्यों उदास हैं । इस प्रकार की मेरी वीणा की सुमधुर आवाज पर भी ठाकुरजी उदासीन ही रहे तो नारद जी वीणा बजाना छोडकर विराम करने लगे । तब नारायण ने पूछा कि बानरराज संगीत कैसा लगा ? नारदजी को मश्करी लगी । मेरी संगीत के अभिप्राय को जानने के लिए ऐसे विद्वान बन्दर से पूछ रहे हैं । संगीत के निष्णातो से पूछने के सिवाय बन्दर क्या अभिप्राय देगा । निश्चित ही यह मेरा उपहांस है । और नारदजी से रहा नहीं गया कौर कहा कि इस तरफ तो पूछिये इधर संगीत के जानकार लोग भी हैं । इस प्रकार की जहां भावना हो तो समझ लेना चाहिए कि मानव को प्रसन्न करने की यह एक प्रक्रिया है न कि ईश्वर को । कितने लोग प्रवचन के बाद पूछते हैं कि मेरा प्रवचन कैसा रहा । इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रवचन भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं था बल्कि आप सभी को प्रसन्न करने के लिए था । अन्यथा भगवान को पूछता कि भगवान मेरी भक्ति आपको अच्छी लगती है या नहीं, मेरा प्रसाद आपको प्रिय लगता है या नहीं । प्रिय लगने के लिए और अच्छा बनाऊं ।

भगवान ने नारद जी से कहा कि अपनी वीणा इस कपिराज को दीजिए । अरे भगवान यह बन्दर मेरी वीणा को तोड डालेगा । तार तोड डालेगा । यह चंचल है । मेरे ऊपर विश्वास रखिये भगवान ने कहा । तोड देगा तो सोने का बनवा देंगे । नारद जी मन को कठोर करके वीणा बानर राज को दे दिये और बानर राजने वीणा को हाथ में लिया ।

मधुर स्वर में परमात्माकी भक्तिमें धीरे-धीरे वाद्य प्रारंभ किया, सभी अपने स्वस्म को भूल गये । तन्मय हो गये । स्वयं बानरराज भी उसी में खो गये ।

भगवान ने चुटकी बजाई सभा स्तब्ध हो गयी और भगवान ने पूछा कि कपिराजकी संगीत कैसी लगी । सभी सभा बोल उठी ऐसी संगीत पूरी धरती पर कोई बजा नहीं सकता। इसका वर्णन भी शक्य नहीं है । नारदजी अब आप अपनी वीणा ले लो । नारदजी भी प्रसंशा करते हुए कहने लगे कि मैं स्वयं को उत्तम संगीतकार मानता था लेकिन आप तो हम से भी आगे हैं । नारदजी अपनी वीणा लेने गये लेकिन जहां वीणा रखी थी वहां से उठा नहीं सके तो नारदजीने भगवान से पूछा प्रभु यह क्या हो गया । लगता है इस बन्दर ने कोई चरित्र कर दिया है । नारदजी इस कपिराज की संगीत से पत्थर भी पिघल गया है जिसमें आपकी वीणा फंस गयी है । आप अब ऐसी संगीत बजाइये कि पत्थर पिघल जाय । नारदजी ने कहा ऐसा तो हमें नहीं आता । भगवान ने कहां कपिराज आप संगीत प्रारंभ कीजिए । कपिराजने संगीत प्रारंभ किया और पत्थर पिघल गया । वीणा उसमें से छूट गयी । भगवान ने कहा नारदजी इस प्रकार मेरे लिये वीणा बजाई जाय तो पत्थर भी पिघल जाता है लेकिन जगत को प्रसन्न करने के लिये बजाया जाय तो उसे हम स्वीकारते ही नहीं । नारदजी को खबर हुई कि यह कोई संगीत बजानेवाला सामान्य बन्दर नहीं है । यह तो स्वयं हनुमानजी हैं । इन्होंने भगवान को प्रसन्न करने के लिए धुन बजाई थी । धुन करिये, कीर्तन करिये, भजन करिये, कथा करिये जो भी करिये वह भगवान के लिये होना चाहिए । अपनी सम्पूर्ण क्रिया भगवान के लिए होनी चाहिए । उसे ही भगवान स्वीकार करते हैं ।

भगवान स्वामिनारायण ने बारहवें वचनामृत में यही बात की है । मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल इत्यादि बजाकर कीर्तन गाना चाहिए जिसमें भगवान की स्मृति होती रहे, यदि भगवान को भुलाकर जागतिक लोगों के लिये हो तो उस जीव को शांति मिलती नहीं है । इसलिये भगवान का कीर्तन, नामरटन, धुनि नारायण के लिये करनी चाहिए । उनकी मूर्ति का स्मरण करके करना चाहिए ।

•

गांठ का गोपीचंदन

- ह.जी. स्वामी (गांधीनगर)

तुंगभद्रा नदी के किनारे एक जहाज लगी थी । वह कोई सामान्य जहाज नहीं थी । इसमें सोने के कीमती आभूषणथे । जहाज में एक देवी बैठी हुई थीं । उन आभूषणों की रक्षा कर रही थी । इतने में वहां एक गरीब ब्राह्मण आ गया । उसने आश्चर्य के साथ पूछा देवि ? आप कौन हैं ? यह जहाज किस चीज का है ? इसमें क्या भरा है ? भूदेव ! यह आप के काम का नहीं हैं । यह जयचंद शेठ का माल है देवी की बात सुनकर ब्राह्मण ने कहा हम गरीब हैं । इसमें से कुछ हमें दे दीजिएन !

देवी ने कहा इसमें क्या ? शेठ के पास तो बहुत बिना हिसाब का धन भी पडा है । परंतु शेठ की आज्ञा विना हम कुछ दे सकती नहीं । एक काम करो शेठ को इस जहाज के आने की सूचना दो और उसी से चिठ्ठी लिखाकर ले आओ तो मैं तुम्हे १०० सोने की मुहर दे दूंगी ।

यह सुनकर ब्राह्मण खुश हो गया । संदेश वाहक के रुप में वह शीघ्रगति से शेठ के घर गया । उसे संदेशा दिया कि आप की जहाज सोने से भरी आगयी है । मुझे भी कुछ दीजिए इस प्रकार का निवेदन किया ।

भूदेव ? इसमें पूछने की क्या बात हैं । मेरे पास अनगिनत धन पडा है । उसे कहां रखूं इसकी चिंता बनी रहती है । इसमें से जितना चाहो ले लो । लेकिन जहाज की देवी आपकी चिठ्ठी के विना कुछ नहीं देगी । कृपा करके चिठ्ठी आप लिख दो । शेठने तुरंत ही चिठ्ठी लिख दिया । वह चिठ्ठी

लेकर ब्राह्मण जहाज की तरफ चल दिया और रास्ते में जो भी मिलता गया उसे कहता गया कि मुझे सोने की दीनार मेलेगी तो उसमें से आप को भी देंगे ।

ऐसा वचन देकर वह जहाज की देवी के पास आगया । चिठ्ठी देखकर देवी ने कहां जितना तुम्हे चाहिए उतना ले लो । आदेश मिलते ही वह जहाज में चढा और वह ज्यों ही सोने का स्पर्श किया कि उसका हाथ उसमें चिपक गया । निकला ही नहीं ।

ब्राह्मण किं कर्तव्य मूढ होकर देवी की तरफ देखने लगा । उत्तर में देवी ने कहा कुछ देना पडेगा नहीं तो ऐसे ही चिपका रहेगा । ब्राह्मण ने कहा मैं तो गरीब ब्राह्मण हूं । लेकिन दूसरे हाथ को छुडाने के लिये कुछ देना तो पडेगा । इसलिये कि यह धन राक्षसी धन है । विना कुछ दिये तो छोडेगा ही नहीं । देवी की ऐसी बात सुनकर ब्राह्मण धबड़ाकर कहा कि मेरे पास तो पोपीचंदन है । इस के सिवाय कुछ नहीं है ।

देवी ने कहा कोई बात नहीं । गोपीचंदन रख दे । ब्राह्मण ने ज्योंहि गोपीचंदन रखा त्यों हि दूसरा हाथ भी छूट गया । खाली हाथ ही घर आया । सभी उसके इष्ट मित्र मिले तो धन मांगने लगे तो उसने कहा कि मुझे तो कुछ मिला ही नहीं । लेकिन तूं तो कह रहा था कि हमें बहुत धन मिलने वाला है । वह सब कहां गया हम सभी को ठग दिया । ब्राह्मण ने कहा, सोना मोहर की बात तो जाने दे, हमारा गोपीचन्दन भी चला गया । यह तो अच्छा मानो कि वहां से वापस आ गया । अब उस ब्राह्मण को राक्षसी धन की भयानकता समझ में आ गयी ।

महाशय ! ऐसा होता है । खराब धन लेने के लिऐ जा रहे ब्राह्मण की हालत कैसी हुई ! सुखी होने के लिऐ पसीने से कमाये हुए धन से अच्छा कोई साधन नहीं हैं । जहां-तहां अपवित्र धन कदापि कीसी को भी सुख देता नहीं हैं । गंदे लोभ में फसने से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं होता । बल्की कईबार तो अन्याय का एक रुपिया भी हानिकारक होता है । समाजमें एक कहावत प्रचलित हुई हैं कि उन्होंने तो व्यवहार में "गांठनुं गोपी चंदन" गुमा दिया । सो बात की एक बात, शिक्षापत्रीमें पूछकर व्यवहार करनेवाले गृहस्थ कदापि दुःखी नहीं होते ।

●

अपने सम्प्रदाय का गौरव

नवा वाडज के प.भ. प्रो. रमेशभाई जे. कोरिया के पुत्र जतीनकुमार रमेशचन्द्र कोरिया मास्टर आफ इन्फोरमेशन टेकनोलोजी ग्रीफीज युनिवर्सीटी, ओस्ट्रेलिया में प्रथम नम्बर प्राप्त कर एवोर्ड प्राप्त किये है । इन्हे अच्छी जोब भी मिल गयी है । धन्यवाद ।

पृष्ठ ११ से आगे

सत्संग सुरभि

भेट में समर्पित करता हूं । जिसे आप स्वीकार करें और हमें इस अपराध में से मुक्त करें ।

दयालु श्रीहरि मुस्कराये और बोले शेठ ? खडे हो जाओ, आप तो हमारे ही हैं, आपके सभी अपराध आज से माफ हो गये । आप संतो की आजसे सेवा करो एवं भजन करो इसी में हमारी प्रसन्नता है ।

महाराज की प्यारभरी दृष्टि से शेठ को महाराज के सर्वोपरिता की एक झांकी का दर्शन हो गया । उसी समय मन से श्रीहरि के चरणों मे समर्पित हो जाने का संकल्प कर लिया ।

बाद में तो शेठ को महाराज के प्रति ऐसी आस्था हो गयी कि तीन-चार वर्ष में ही घर परिवार छोडकर संसार का परित्याग कर महाराज की शरण में आ गये । महाराज बहुत प्रसन्न हो गये ।

श्रीहरि के प्रभाव से प्रभावित होकर शेठ से साधु हो गये । इसी लिए श्री हरि उनका नाम प्रभवानन्द रखकर साधु की दीक्षा दे दी । श्री कृष्ण भगवान सवा सौ वर्ष में एक भी साधु नहीं बना पाये, यहां महाराज से आकृष्ट होकर एक शेठ धन दौलत सब कु छ छोडकर स्वेच्छया साधु बन गया ।

यथार्थ में श्रीहरि की लीला अपार है । जिसके श्रवण मात्र से ही त्रिविध ताप सरलता से दूर हो जाते हैं ।

मंगलाशासनम्

स्वस्तिश्रीमान्निखिल गुणगणाऽलंकृतानामनवद्यविद्याविद्योतिताऽन्तःकरणानां - नरनारायणकृपाप्रसाद दत्तचित्तानांस्वतःप्रसन्नतयास्वतनय श्री १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महोदयं - श्री स्वामिनारायणपीठाचार्यपदप्रदान संकल्पपूर्णानां १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजनां पौत्र १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसाद महोदयानां मौञ्जी बन्धमहामहोत्सवे मथुरास्थ डो.वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी सप्ताचार्य कृतं सुभाशंसनम् ।

मंगलाचरणम्

दोहा छन्द

तारहारहीर द्युती सचिजितकोटि रतीश
सुर-नर मुनिसेवितचरण-जय द्वारकाधिश ॥१॥
वक्षःस्थले राजति यस्यलक्ष्मी, श्री राधिका शोभित वाम भागे ।
श्री स्वामिनारायणहृल्लसन्तं, श्री कृष्णदेवं हृदि चिन्तयामि ॥२॥
स्वामिनारायणं वन्दे छपिया भूमिभास्करम् ।
श्री तेजेन्द्रप्रसादानां प्रपितामह पूर्वजम् ॥३॥
स्वामिनारायणं वन्दे हनूमत्पूजकं मुदा ।
नर नारायणौदेवौ स्थापितौयेन गुजरे ॥४॥

१००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादा :-

सृष्टिस्तेवशवर्तिनी भवतुवै श्री स्वामिनारायणो, भक्तास्तेसततंभवन्तुसुखिनो देशेविदेशेष्वपि ॥
पौत्राद्याश्च प्रपौत्ररत्नसहिता, ष्युः सर्वदाकीर्तियुक् श्रीतेजेन्द्रप्रसादविज्ञभवने नित्यंभवेत् मंगलम् ॥५॥

१००८ श्री कोशलेन्द्राचार्य :-

यैराचार्यवरैः स्वपितृचरणानामाज्ञया वै मुदा, श्री स्वामीसहजार्यपीठतिलकाचार्यत्वमंगीकृतम् ॥
वैशाखेऽथय सत्तिथौ बुधदिने श्री कौशलेन्द्राबुधाः, कुर्वन्त्यद्य व्रजेन्द्र लालजिशिशोः मौञ्जीव्रतं मङ्गलम् ॥६॥

१००८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी -

आयुष्मान् भव कीर्तिवान् भव सदाविद्वद्वरिष्ठो भव लक्ष्मीस्तिष्ठतुसंततं शुभकरीसिद्धि प्रदासर्वदा ॥
प्राणादोत्तर श्री व्रजेन्द्रवटुकस्त्वं धर्मनिष्ठोभव श्री श्रीकौशलदेवतात कृपया नित्यं भवेन्मंगलम् ॥७॥

श्री व्रजेन्द्रप्रसादस्य मौंजीव्रतमहोत्सवे
मंगलंभवतात् नित्यं नरनारायणाशिषा ॥८॥
तिर्गोतिर्गतिवातित्वां परिपण परिपयाम्
मापद्यात्परिपद्यातुउतिराति वितिसुते ॥९॥
श्रीमच्छ्रीवर पादाब्ज पराग परिलालितः
वासुदेवश्चतुर्वेदो मंगलाशासनं व्यधात् ॥१०॥

(प.पू. लालजी महाराजश्री के उपनयन संस्कार प्रसंग पर मथुरा के संस्कृत के विद्वान डॉ. श्री वासुदेवकृष्ण शास्त्रीजी सुन्दर लाक्षाणिक रचनाओं द्वारा अपनी भावना को व्यक्त किये है ।)

सत्संग समाचार

**अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी के दिन श्रीहरि के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर प.पु.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कालूपुर की तरफ से उत्सव में दर्शनार्थ आये हुए हरिभक्तों के लिए प्रातः ९-३० से ३-०० बजे तक ठन्ढी छाछ का वितरण किया गयाथा। रात्रि में ८ से १० बजे तक कीर्तन का बडा सुन्दर आयोजन किया गया था। जिसमें श्री हरिके तीनो अपर स्वरूप विराजमान थे। प्रसंग के समय हरिभक्तों पर अति प्रसन्न हुए थे। सभा संचालन श्री नीतिनभाई सोनीने किया। - *श्री न.ना.यु.मंडल, कालुपुर*

उपनयन संस्कार के प्रसंग पर कांकरिया मंदिरमें ब्लड डोनेशन केम्प

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामबाग कांकरिया में प.पू.लालजी महाराज श्री के उपनयन संस्कार के प्रसंग पर बाल स्वरूप कष्टभंजन देव के शुभ सांनिध्य में ता.२१.-५-०५ को शनिवार सायंकाल ७ से १० बजे तक ब्लड डोनेशन कैम्प डो. रमेश परीख तथा अन्य डॉक्टरो के सहयोग से आयोजिन किया गया। यहाँ पर महीने के तीसरे शनिवार को ब्लड डोनेशन का आयोजन किया जायेगा। - *को. आनंद स्वामी*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटेत्सव सम्पन्न

श्रीहरि के दिव्य धर्मकुल आचार्य महाराजश्री के सम्पूर्ण परिवार की आज्ञा से यहां के मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव का १६ वां पाटोत्सव प.भ. ईश्वरभाई अमृतलाल मेहता के यजमानत्वमे सम्पन्न किया गया था। इस प्रसंग पर ठाकुर जी का महाभिषेक, छप्पन भोग, अन्नकूट दर्शन, तथा महापूजा का कार्यक्रम रखा गया था। पूजा विधि पुजारी स्वामी ने किया। सभी दर्शनार्थी दर्शन करके अति धन्य बन गये। - *पूजारी स्वामी*

साबलवाड (इडर देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से साबलवाड सेवा सहकारी मंडल तथा साबलवाड दूध उत्पादक सहकारी मंडल का रजत सुवर्ण जयन्ती समारोह प.पू.ध.धु.आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में सम्पन्न किया गया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दीप प्रकट करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सभा में श्री न.ना.देव यु.मंडल के युवानो ने "गुरुमंत्र" के उपर अच्छा उद्‌बोधन किया। अन्त में प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्रीने शिक्षापत्री का यदि अक्षरशः पालन किया जाय तो जीवन में कोई व्याधि नहीं आयेगी ऐसा प्रेरणात्मक आशीर्वाद दिया था। श्री न.ना.यु.मंडल ने सुंदर सेवा कार्य किया।

- *हसमुख पटेल, श्री न.ना.यु. मंडल*

नवा वाडज मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री घनश्याम महाराज के वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर ता.१३-४-०५ के दिन प्रात श्री ठाकुरजीका अभिषेक, पूजन, अर्चन शास्त्रोक्त विधि से शास्त्री गोपालकृष्ण ह. शास्त्री ने करवाया। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. अनिलभाई रतिलाल सोनी परिवार ने सेवा का लाभ लेकर श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारी।

यहां पर पांच रात्रि में पारायण का आयोजन किया गया था। जिसमें शा. स्वा. निर्गुणदासजी, महंतश्री, कालूपुर, पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाश-दासजी, घनश्याम स्वामी, प्रेमस्वरूप स्वामी, रामस्वामी आदि संतो के वाणी का अलभ्य लाभ सभी हरिभक्तों ने लिया था। शिक्षापत्री की आज्ञा में रहना और धर्मकुल के आश्रित रहने पर सभी ने बल दिया। - *प्रतिनिधि शंभुभाई हीरजीभाई पटेल*

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा लूणावाडा में सत्संग का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री की आज्ञा से श्री नर ना.यु.मंडल द्वारा ता. ७-०५-०५ की रात्रि में ९ से १२ बजे तक सत्संग का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर विसनगर से प.भ. उदयनभाई महाराजा तथा युवक मंडलने सभा में नन्द संतो के कीर्तन गाकर सभाजन को आनन्दित किया था। प.भ. उदयनभाईने सर्वोपरि संप्रदाय तथा सर्वोपरि श्रीजी महाराज तथा सर्वोपरि धर्मवंशी के नियम, निश्चय तथा पक्ष का उदाहरण देकर सभी को यथार्थता का ज्ञान कराया था।

- *राकेशभाई पटेल*

लवारपुर (जी. गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी महोत्सव धूम धाम से सम्पन्न :

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की असीमकृपासे प.पू. बडे महाराजश्री तथा श्री नरनारायण देव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री की आज्ञासे लवारपुर में समस्त हरिभक्तों के सहकार से ता. १३-४-०५ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिरके दशाब्दी महोत्सव को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंगके उपलक्ष्य में ता. ९-४-०५ से ता. १३-५-०५ तक श्रीमद् भागवत् दशम स्कंध पारायण शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (महंतश्री, नारायणघाट) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । आबाल नरनारी सत्संगी सभी ने कथा रस का पान किया । ता. १३-५-०५ के दिन प.पु.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पदार्पण किये तब गांव के सभी हरिभक्तों ने धूमधाम से स्वागत उत्सव मनाया था । प.पु.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर में ठाकुरजी की दशाब्दी महोत्सव की आरती उतारकर सभी को दर्शन का अलौकिक लाभ दिया था ।

पश्चात् कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभामें विराजमान हुए थे । संतोकी प्रेरणादायी प्रवचन के बाद आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *- को. रणछोडभाई पटेल*

साकोदरा मंदिर (धोलका देश)

धोलका देस के मुरली मनोहर देव देशके साकोदरा गांव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पाटोत्सव प्रसंग पर ता. ५-५-०५ की रात्री में ९ से २ बजे तक प.भ. श्री जयेशभाई सोनी तथा श्री न.ना.देव यु. मं. द्वारा कीर्तन भजन का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स्वा. धर्मजीवनदासजी तथा अन्य सन्त पधारकर कथा प्रवचन करके सभी को सुन्दर लाभ दिया था । साकोदरा गांव के भक्तजन ने कीर्तन भजन का तथा संतो के प्रवचन का लाभ लेकर धन्य हो गये थे ।

- लालजीभाई कालूभाई पटेल

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिर में बडे महाराजश्री दर्शनार्थ पधारे

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर मे अपने बडे महाराजश्री संत पार्षदों के साथ श्री राधाकृष्णदेव तथा हरिकृष्णमहाराज के दर्शनार्थ पधारे थे । मूली मंदिर के महंत स्वामी पू. लक्ष्मीप्रसाद स्वामी, पू.स्वा. बालकृष्णदासजी आदि संतोने प.पू.बडे आचार्य महाराजश्री की आरती पूजा करके सन्मानित किया था । यहां के वयोवृद्ध स्वामी गोविन्दप्रसाद दासजी के त्रयोदशाह के निमित्त श्रद्धांजलि सभामें पधारकर समस्त सभाको आशीर्वाद देकर स्वामी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी । उनके शिष्य स्वामी जयप्रकाशदासजीने अपने गुरुके अंतिम संकल्प के अनुसार सर्वोपरि श्रीहरि के प्रसादी की बहुत सारी वस्तुयें प.पू. आचार्य महाराज श्री को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये अर्पण किये थे । ऐसे संत को लाखों वंदन । प.पू. बडे महाराज श्री उनपर अतिप्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बाद में वयोवृद्ध बिमार संत रामस्वामी को देखने होस्पिटल गये थे । स्वामी को भगवान के प्रसादी का चरणामृत पिलाकर आशीर्वाद दिये थे ।

-महंत स्वामी नरेन्द्रप्रसादजी

सुरेन्द्रनगर मंदिरमें वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंतस्वामी प्रेमजीवनदासजीकी प्रेरणा से मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव ता. २२-४-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सांनिध्य में धूम धाम से सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर महाभिषेक अन्नकूट तथा श्रीहरियाग का आयोजन किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजीकी आरती उतारकर अपने मंदिर का निरीक्षण करके अति प्रसन्न हुए थे । समग्र प्रसंग की व्यवस्था शा. स्वा. प्रेम वल्लभदास ने की थी ।

चैत्र शुक्ल ९ श्री हरिजयंति रामनवमी को ता. १८-४-०५ के दिन यहां के मंदिरमें प्रातःकाल समूह महापूजा, अखंड धुनि तथा राम जन्मोत्सव की आरती तथा सायंकाल भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया था । रात्रि में १०-१० बजे भगवान के प्रागट्योत्सव की आरती धूम धाम से सम्पन्न की गयी । *-शैलेन्द्रसिंह झाला*

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा तथा श्रीहरिप्राकट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से श्री न.ना.यु.मं. द्वारा ता. २३-३-०५ के दिन श्री नागरभाई के यहां सत्संग, ता.२०-४-०५ के दिन ठक्कर अमृतभाई के यहां, ता. १८-४-०५के दिन चावणा लालजीभाई के यहां सभा का आयोजन किया गया था। यहां के मंदिर में रामनवमी के दिन श्रीहरि प्राकट्योत्सव प्रसंग पर गांव में नगर यात्रा धूम धाम से निकाली गयी थी। रात्री में १०-१० के समय श्री बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का प्राकट्योत्सव धूम-धाम से सम्पन्न किया गया था। मंदिर के महंत स्वामी विष्णुचरण दासजी की प्रेरणा से सत्संग सभा में कथा वार्ता तथा कीर्तन भक्ति का कार्यक्रम किया गया था।

- श्री न.ना.देव यु.मं. चंदुलालजी

विदेश सत्संग वृत्तान्त

मिडवेस्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (I.S.S.O.)

सर्वोपरि श्रीनरनारायण देव एवं श्रीजी महाराजकी कृपा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से महंत स्वामी धर्म वल्लभदासजी की प्रेरणासे ता. २६-३-०५ को मंदिरमें सर्वोपरि श्री नरनारायण देव को हिंडोले में रखकर झुलाया गया था। सभी ने दर्शन का लाभ लिया। युवा हरिभक्तोंने होली के कीर्तन गाकर उत्सव मनाये थे। शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने सर्वोपरि श्री नरनारायण देव की माहात्म्य कथा सुनाकर सभी को आनंदित किया था। इस प्रकार यहां श्री नरनारायण देव जयन्ती उत्सव धूम धाम से संपन्न किया गया था।- *प्रवीण भगत - नानाभगत*

सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुन्दर चल रही है। ता.६-०३-०५ को सभा प.भ. खीमजीभाई की तरफ से की गयी थी। ता.१९-३-०५ को भुज के संतोने वचनामृत ऊपर अपने प्रवचन करके आनन्दित किया ता. २०-३-०५ को I.S.S.O. यूथ विंग का प्रारंभ किया गया। आज की सभा श्री हितेश भाई की तरफ से रखी गयी थी। ता.२७-०३-०५ की सभा प.भ.जयेशभाई सोनी तथा वीणा बहन की तरफ से की गयी थी। ता.३-४-०५के दिन समस्त I.S.S.O. के हरिभक्तों की तरफ से सभा का आयोजन किया गया था।

ता. १७-०४-०५ को अपने मंदिर में रामनवमी के दिन बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के जन्मोत्सव प्रसंग पर प्रातः ९ बजे से सायं ५ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामत्र का जप किया गया। इस प्रसंगपर अनेक संस्थाओंने भाग लिया जिसमें वैष्णवसंघ, पेरामेटा भजनमंडली, ब्राह्मणसमाज, श्रीशिवमंदिर, आनंदभाई ग्रुप मंदिर के सभ्य तथा विशाल संख्या में हरिभक्ति भी उपस्थित थे। सायंकाल ५-३० तक I.S.S.O. के युवान हरिभक्तो नें भजन कीर्तन तथा प्रवचन किया था। जिसके मुख्य यजमान श्री विष्णुभाई वाघजीयाणी तथा श्री अस्गभाई शाह थे।

दोपहर में १२बजे श्री रामजन्मोत्सव की आरती तथा ६-३० से महापूजा का आयोजन किया गया था। जिसमे बहुत सारे हरिभक्तों ने भाग लिया। महापूजा की पूर्णाहुति के बाद भजन का सभीने आनंद लिया। रात्रि में १०-१० बजे भगवान श्री स्वामिनारायण के प्राकट्य की आरती उतारी गयी। बालप्रभु को पालने में झुलाकर सभी भक्तजन आनंद में डूब गये थे। इस समय सभी ने एक अलौकिकता का अनुभव किया। असंख्य हरिभक्त दर्शनार्थ आये हुए थे।

श्री हनुमान जयंति उत्सव

अपने सीडनी मंदिर में श्री हनुमान जयंति का प्रसंग प्रातः ११ बजे हनुमानजी के हवन-पूजन के साथ प्रारंभ किया गया (I.S.S.O.) मंडल ने श्री हनुमान चालीसा का ५१ पाठ किया। श्री अमृतभाई भट्ट ने श्री हनुमानजीका माहात्म्य बताया था। इस उत्सव के मुख्य यजमान अर्जुनभाइ मेहता, श्री तनसुखभाई, श्री तुषारभाई भट्ट, श्री रामकृष्ण त्रिवेदी तथा अ.नि. दीपकभाई अमरसिंह परिवार थे। सभी साथ में हनुमान स्तोत्र गाकर आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर विशाल संख्या में भावुकों ने दर्शन का लाभ लिया था।

ता. ६-३-०५ की सभा श्रीमती चित्राबहन तथा ता. २०-३-०५ श्री हितेशभाई थानकी परिवार,

ता. ३-४-०५ प.भ. सुरजभाई वाघजीभाई तथा प.भ.धनसुखभाई, ता. १०-४-०५ को श्री जदुभाई (रामपर), ता. ३०-४-०५ श्री मुकेशभाई पंड्या द्वारा प्रार्थना । इस प्रकार अपने सीडनी मंदिर में विविध उत्सवों में हरिभक्तों ने दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था ।

- विरेन जे. देसाई

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव धूम धाम से सम्पन्न

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. ध.धु.आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. विश्वप्रकाशदासजी (लालोडा-अमदाबाद) की प्रेरणासे अपने ह्युस्टन मंदिर में श्री राधाकृष्ण देव, श्री हरिकृष्ण महाराज का पंचम पाटोत्सव ता. १३-३-०५ को धूम धाम से मनाया गया । जिसके मुख्य यजमान डो. कोमनी बहन शैलेशकुमार मजमुदार, महाभिषेक के मुख्य यजमान श्री विमलभाई तथा कीर्ति बहन परीख, महापूजा के मुख्य यजमान तथा बेलाबहन पटेल, छप्पनभोग के मुख्य यजमान सपलबहन मनीषकुमार पटेल (डलास) आदि यजमान हरिभक्तोने ऐसा अलभ्य लाभ लेकर कृतार्थ हुए थे । प्रासंगिक सभा में स्वामी विश्वप्रकाशदासने पाटोत्सव का माहात्म्य समझाया था । पाटोत्सव की सेवा में प्रमुख श्री देवेन्द्रभाई पटेल तथा कारोबारी एवं श्री न.ना.यु.मंडल अत्यन्त श्रद्धा से श्रीहरि कृष्ण महाराज को प्रसन्न किये थे । प.पू.आचार्य महाराज श्री की कृपा से यहां पर सत्संग सुन्दर चल रहा है ।

- सेक्रेटरी श्री रमेशभाई पटेल

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन I.S.S.O. चेप्टर)

यहां २२ अप्रैल शनिवार सायंकाल २-३० बजे सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिसमें हरिभक्तों द्वारा कथा प्रवचन का भजन-कीर्तन का एवं नित्य नियम का आयोजन किया गया था । हरिभक्तोंने बडी संख्या में उपस्थित होकर आनंद का लाभ लिया ।

-कनुभाई पटेल

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर में वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध पूज्य स.गु. गवैयास्वामी श्री केशवजीनवदासजी (नारायणघाट एव सापावाडा मंदिर के निर्माता) वैशाख शुक्ल वद ६ ता. २९-५-०५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं ।

लालोडा ता. इडर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स्वामी चेतनप्रसाददासजी गुरु स.गु.घनश्यामजीवनदासजी वैशाख वद ४ के दिन श्रीहरिका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

मूली : श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वा. रामस्वरूपदासजी गुरुस.गु.स्वा. नंदकिशोरदासजी श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं ।

कुबडथल ता. दशक्रोई : प.भ. हरिकृष्णभाई मणीलाल पटेल श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. ७-५-०५ को अक्षरनिवासी हुए हैं ।

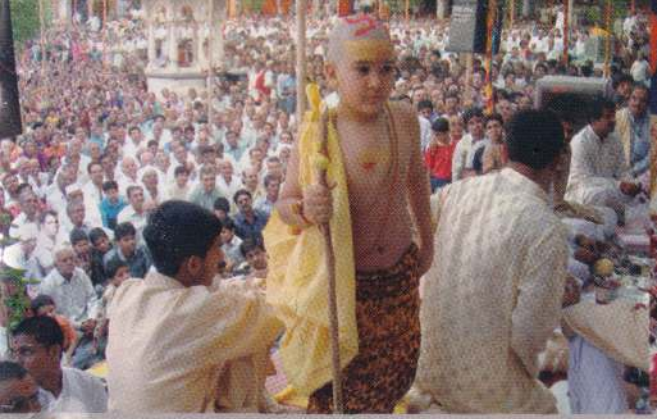
रवेरोल ता. प्रांतिज : प.भ. रावजीभाई जोइताराम पटेल के सुपुत्र कृणाल ता. २८-०४-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरणकरते हुए अक्षर निवासी हुए ।

वकतापुर ता. प्रांतिज : प.भ. जसवंतभाई के पुत्र प.भ. हरेशभाई ता. ३-०५-०५ तथा प.भ. रसिकभाई के पुत्र प.भ. आशिष ता. ३०-४-०५ को तथा प.भ. पंकजभाई के पिताश्री प.भ. बाबूभाई ता. ३-५-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

लींबला, साबरकांठा : प.भ. कांतिभाई के पिताश्री शंकरभाई पटेल श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं ।

पोरबन्दर : यहां के मन्दिर के कोठारी प.भ. गोपालदास रणछोडदास काछेला ता. ३-५-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. रमणीकलाल के पिताजी प.भ. गोविन्दभाई नाथाभाई हीरपरा (गांव-तोरी, हाल-मणीनगर) ता. ८-५-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं ।



यज्ञोपवीत की एक अद्भुत विधि "भिक्षाचरण" का यह दिव्य दर्शन जीवन में उत्तर जाय तो जिवन का बेडापार हो जाय। जिस अलौकि दिव्य स्वरूप का दर्शन हो रहा है



प्रासंगिक सभा में श्रीहरि के दोनों अपर स्वरूपों का दर्शन।



देश-विदेश के छोटे-बडे अनेक भक्तोंने प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराज को प्रसन्न करने के लिये नाना प्रकार से भेंट दिया था। उसमें से एक बाल सखा अर्जुन संजयभाई सोनी सुवर्णकी यज्ञोपवीत देकर सम्मानित किया।

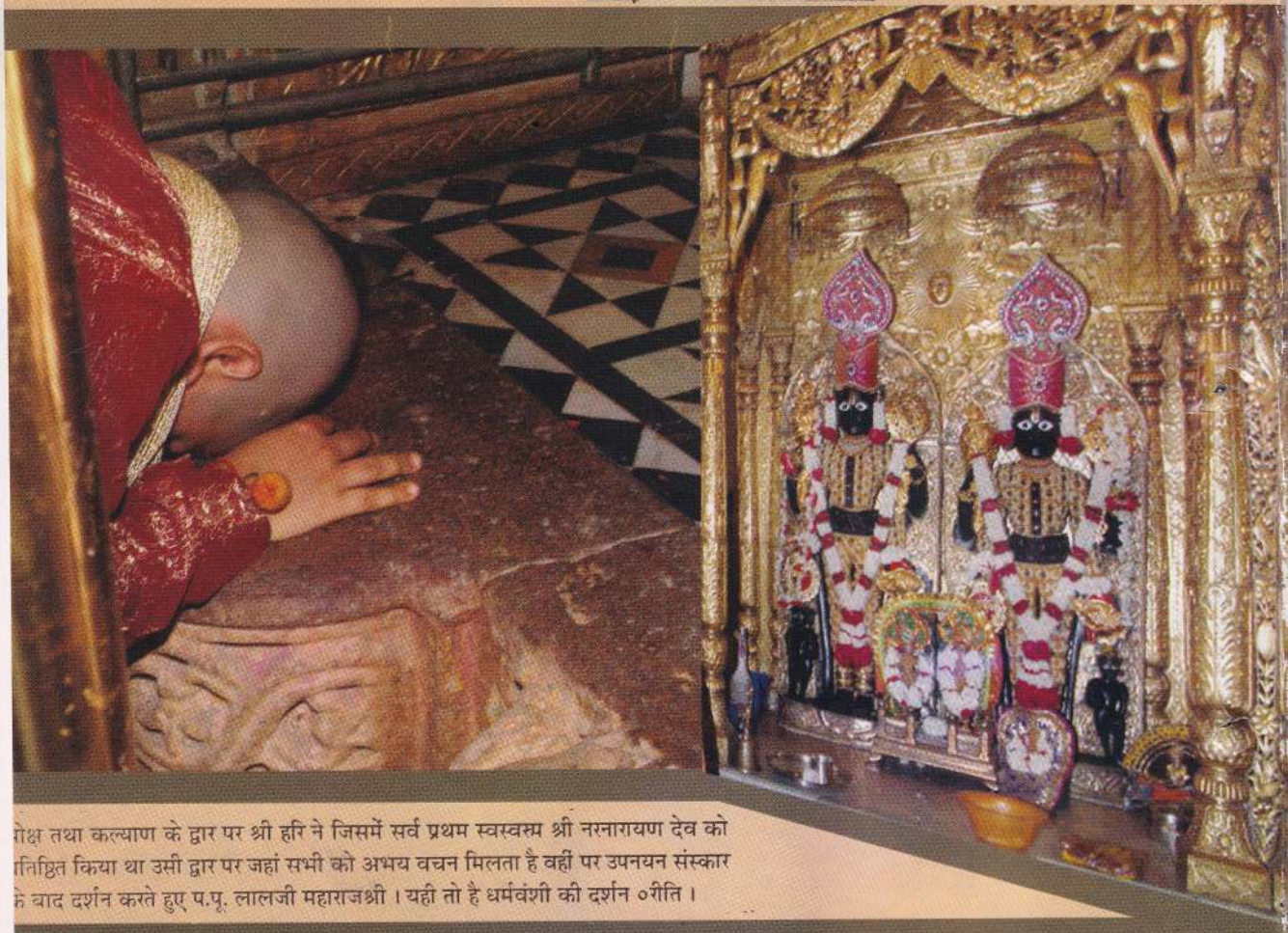


यज्ञोपवीत विधिको रसपूर्वक दर्शन करती हुई गांव - गांव व
सांख्ययोगी बहनें।





उपनयन संस्कार प्रसंग पर श्री स्वा. बाग में आयोजित अनिल धोलकिया तथा साथी कालाकारों के भक्ति संगीत का आनंद लेते हुए



मोक्ष तथा कल्याण के द्वार पर श्री हरि ने जिसमें सर्व प्रथम स्वस्वरूप श्री नरनारायण देव को प्रतिष्ठित किया था उसी द्वार पर जहां सभी को अभय वचन मिलता है वहीं पर उपनयन संस्कार के बाद दर्शन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । यही तो है धर्मवंशी की दर्शन ०रीति ।



उपनयन संस्कार प्रसंगपर आयोजित विशाल दिव्य सभा में संत हरिभक्त समूह आरती करते हुए ।

Praful Khirani